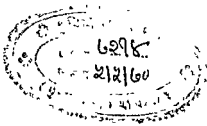




२२३
कहानी

उणियारा

शिवराम चंभाणी



कल्पना प्रकाशन, वीकानेर

प्रकाशक
कल्पना प्रकाशन
कृष्ण कुंज, वीकानेर

© शिवराज छंगाणी

प्रथम संस्करण

मूल्य : तीन रुपये मात्र

मुद्रक
नीलम आर्ट प्रेस,
दाऊजी का मन्दिर, वीकानेर

UNI (Jasthani Sketches)

२२३

राजस्थानी

६२१६

२१२१६०

प्रतियारों का बोल

राजस्थानी भाषा का मानीता कवि हर लेखक श्री निबराज जी छगणी की पोथी 'उलियारा' की रचना का बाच-जांच में जी सौरो हुये । राजस्थानी गद्य की समरसता घर इकजाई पण की मोल्ल मन्ने इयै कृति में पदया हुयी । संस्कृत साहित्य-शास्त्रयो, कविता की कमीटी गद्य में मानी है । 'घां भांत अँखरें-घांरें मती है । जिसे ताई' बोला निबंध, नाटक, रेंता-बिन्न, जीवनी लेख, उपन्यास घर कथा-रिपोर्ताज, आपणी भागा में नीं तिर जीजगी उसी ताई' आपणी साहित्य-यात्रा की रथ सेजी खुं घांरें नीं बध सकैलो । घाज जद के राजस्थानी भासा, साहित्य घर संस्कृति रें दरवाजे मांरें नुवै जुगरो हेमो पूरीजरयो है, संक्रमण की घांधी परम्परा का बूढा रुंक्षा नै सपेटे में लेयरी है, उला घडी जिका राजस्थानी सिरजण-हार भेसली घाम्यां रचना-नीण है उला की जुग-जंकार ।

५६

श्री निवरात्र जी रं भोगक मूं राजस्थानी रं नुर्वं साहित्य क्षेत्र
घणो उमीवां हें आं री निगावट साफ-साथी पणू पूरो अक्षरदार, चर
भर मांयली मार घान्नी हें । 'उगियारा' रा रेगा-चितारामां में तिं
पकड़ जिसी मनोभोगकारी रचना घान भगसो सो 'नागञ्जी', 'नालियो सैती
वर 'पत्ती रा रमा'र' सरगा जूना-जबरा संस्मरणं री मोन् सहरा रेसः
चितराम भी ।

इयं सरावण जोग सिरजण सारू श्री छंगाणी जी नै घणै मत
वघाई । ओ पतियारो मूं रामूं हूं क' इयं तरैरी नुवी विघावां पत्ती
राजस्थानी री युवा पीढ़ी आप री पूरो व्यान-सरंजाम जुटासो । आ पोदी
पाठकां नै रुचसी, विद्वानां सू आदरीजसी, इण भरोसे सागै—

डा. पुरुषोत्तम लाल भेनारिवा

निदेशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)

उदयपुर

प्रकाशक

वसन्त प्रकाशक
पुस्तकालय

प्रकाशकीय

बलरत्न प्रकाशन अपनी परम्परानुसार राजस्थानी भाषा के सशक्त कवि, गीतकार एवं कथाकार श्री तिवराम खंगाली के प्रथम रंगी चित्रों का मरम्मत प्रस्तुत करने हुए गौरव अनुभव कर रहा है। इस अवसर पर अद्वैत शुक्ली श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' एवम् श्री ओजस पारीक का जो सहयोग मिला है उनके लिए हम आभारी हैं।

—कृष्ण जनसेवी

दूकै में

राजस्थानी सूं म्हारो लगाव ऊपर छाळो नईं हुयर हिरदै सूं है।
पणै सूं लैयर अवार तईं घर रै आंगण सूं लैयर कवि सम्मेलनां रै मंच
रि विचार गोस्थियां में म्हारै इण सँस्कारां में वढोत्तरी हुयी है।

मैंने तुनछावण नू नैबर ज़ीवण जगत रा द्यौंवार भाऊ काम-काज में
 आवण अछी भासा रै रूप नै ओख्यवण रो मुभाग मिल्यो है ।

घण्यरो परभाव है या री चरवा करणी अवम समभूँ जिका में
 कभी नो मायद-भाना री मेवा गानर वीर हाडा ज्युँ जीवण निछरावळ
 करण रो आदर्म धरपरयो ह । इया मे राजस्थानी रा वयो वृद्ध लेखक थी
 मुरलीधर जी द्याम अरु थी भतमात जी जौमी रा रूप आख्या आर्म हर्मगा
 वण्या रैवै ।

इजो परभाव वां रो है जिका राजस्थानी री विमरीज्योडी प्रतिष्ठा
 नै फेरु धर्यण री जो तोह कोमीम कर रैया है इया मे थी श्रीलाग नभमल
 जो जोगी, थी मोहनलाल जो पुरोहित, थी दीनदयाल जो आंभ्रा अरु थी
 भगवानदनशी गोस्वामी आदि री सरजणा है जिकी म्हारी गद्य-लेखना रै
 विकास मे मोकळी ब्रह्मव बटावण आळी रैवी है ।

आ भगळो रै अनावा भेक और परभाव है जिका री परोक्ष-प्रेरणा
 हमेसा ईं वान खातर रैवी है क' हूं राजस्थानी मे रचनात्मक गद्य री
 सरजणा कळ । ओ परभाव है वोकारे रा मानोजना लोक-प्रिय कवि,
 'वात्सायन' रा सवादक हरीश जो भादणी रो अरु मादुल राजस्थानी विमर्क
 इस्टीव्यूट रा शोध अधिकारी, कवि थी प्रकाश परिमल रो । एँ० पुरपोत्तम
 नागजी मेनारिया री किरणा रो भी घणो किताय ह ।

इयै रै अनावा भी म्हारै मार्ये ज्यारो परभाव म्हारै लेखण मे रैयो
 वा भगळो रो भी हिरदँ सूँ आभार प्रगट कर' ।

जागिर मे हिन्दी रा प्रसिद्ध द्वाय-व्यंग्य कवि थी भवानी शकर
 द्याम 'विनोद' थी आंकार पारीक अरु शवादाक थी कृष्ण जनमेवी रो भी
 हिरदँ सूँ आभारी हूं जिका रै बहुविधि संयोग रै दिना म्हारो एण पुस्तक
 नै इयै रूप मे प्रकाशित देखणो सम्भव नई' ह्यु सक्थो । धन्तु

— शिवराज छंगाणो

विगतवार

१. नागजी
२. पत्नी न रमार
३. अमल टिड्डी (अफीमची)
४. भाड़ावर जी
५. पींडी पकड़
६. गुरुजी सा
७. पूरणियो भंगी
८. लालियो सैसी
९. आंटियो वावो
१०. गरीबदासजी
११. हजफानाथ
१२. मारजा
१३. चौपनिया
१४. वरफ आळो
१५. कळी आळो

नागजी

जीवण अक खण रो सपनी स्यो है। मिनख-मिनख सू मेळ मुलाकात करे इमरत सिरसा बोल बोलै, हरेक सू प्रेम-मो'बत राखै वँ इत इण सिस्टी भाषे बच'र रेय जावे बाकी वी नीं रेवे। इमै सभाव रा मोठा मिसरी ज्यु खोन्नण आळा, बात-बात मे मगळां नै ह्या। हुंमा र लौट-पेट करवण आळा हं नागजी।

चावे दियाळी हुयो चावे होळी, चाय नूवों परय हुयो चावे तिवार, नागजी आप आळी सदा सुरगी पोसाके पैरतो। मटमलो थोडो फाट्थोडो कोट, जिंके रँ ऊपर तेलरो चीटी जमियोडो, मैली टोपी कगीशे काड्योडी अ'र टांग्यां दकण नै रगदुयोडो पडियो। उर मे ठिंगणा हा। घणा काळा ही नई; घणा गोरा ही नई, पण गऊभरणे रग रँ बेरे आळा हा।

जद दिनुग-दिनुग हाय मे गुणियो अर बाळी लियोडा निकळता तो धीरँ सो'क "हरि भजन हरि भजन" री आवाज करता घर सू ले'र गळी साई पूगता, इले मे कोई न कोई वाने मिल ही जावतो, अ'र पैल घोन हपारी बोली री नकल करतो : "हरि भजन हरि भजन" कवतो अ'र मसकरी भरयो चुटकयो कैय'र जावतो परे।

फेर नागजी दो प्यार पांवशा भागै घरतां अर कीरनीं मिळतो तो वँ सीपा द्वारकीरी, पावरी दुवान माये जा पूगता। द्वारकी जिंके री साडलो नाव "कुतियो" है, जे इणधी-उणधी काम रे माय अळुंमियोडो रँवतो तो बी बेळा नागजी पतळी सी, मोठी आवाज में हेथी मारता। हेथो, मारने रो तरीसी निराळो हो। वँ कैवता घरे- कुतिया ईया-किया-ईया-किया।

{ ६ }

(१)

भाषे रो नाव सुणतई सै पूछै— बो गाया किया दूबै नागजी । नागजी
 माधेरी गाय दूवण रो नकल करे अर बतावै— पियो-पियो पीपीधिन पियो
 पियो पीपीधिन । हूँ डोन्की बजावू - ताकड़ पित्तो ताकड़ धिन ताकड़ धिन ।
 सगळी महली आळा सुण'र खूब हसता अ'र भजन, वाण्यो गावणी सरु करता ।
 सौर रै मिदरां मे, गळी गुवाड मे जिठै जिठै भगवान रो जागण हुवतो,
 नागजी वठै पूग जावता ।

मुघ विचारा रा भोळे मन रा हरेक रो पीड पिछाणन आळा हा
 नागजी ।

जवानी रो अवस्था मे सोजीनाई करी हुसी पण ढळतो वेळा मे सादो
 पोसाक नै छोटी कोनी ।

आं रै दो वंनां हें अकरो नाम दुरणी अर दूजीरो क्षीरा । टाबट-टीगर
 खुद रै कोनी भतीजी रै रामजी राजी हें ।

अद कदै गळी गुवाड मे जमो जागण हुवै नागजी रो नाव लोगा रै
 होरां पाये रैवे ।

पत्नी रा रमार

संसार में सोच ई मजैरी बात होवै । गावण पीवण रो सोच पैगण-ओढ़ण रो सोच और रमण खेलण रो सोच भी निराहो हुवै । कोभी ततरंज खेले, कोभी चौपड़-पासा, पण खेते बावै नै तास रमण रो सोच ।

जठै-कठै तास रं खेलारां री फट मड्योड़ी रैवै, उठै खेतोजी त्यार । तास खेलणो आनै राव-रोटी सिखो लागै ।

सूरज उदै सूं लेयनै मूरज ग्रस्त हुवण ताई पत्नी रं खेल में अँ जम्पोड़ा रैवै । रात नै खेलण नै बैठता तो भोर अर भोर सूं रात । जे वानै आ बात पूछी जावै खेता बाबा, मीठो खावणो चोखो लागै क 'तास' रमणो ।

वानै मीठो खावणो डांग सो लागतो अर तास खेलण नै हुळस'र त्यार रैवता ।

खेतो जी कद में ठिगणा, मूढो गोळ, आंख्यां कक्की । ललाट माथे च्यार अंक सळ पड्योड़ा रैवता । माथै रै बीचो बीच टाट, पण ललाट रै जीवणे कानी उपर सीक अंक लाल मस्सो हो । केस कड़-कावड़ा । फाट्योड़ो कुरतो अ'र गोडा रै ऊपर तांई ओछो पछियो दोघटी रो पैरण नै रैवतो । खेतो जी कम बोलिया करता हा ।

अँ सभाव सूं मसखरा हा । लोग-भाग आंरै सामी तास खेलण में हाथ खाय जावता । अँ खेलता-खेलता पसवाड़ो भी कोनी फोरता । घर रो काम अर मालिक रो काम पूरी जिम्मेदारी सूं निभावता । आछा मैनती हा ।

विरधावस्था में हाथ में लकड़ी लियोड़ा हीळ-हीळ घेरुलाल जी रै कूवै माथै आवता । संगळिया जिका नित हमेस तास खेलता उणानै सोवता ।

अंक दिन आरं मिनर आनी कंयो-खेताजी, पांने सी बरस पूग्या पाछे
 न वाद करता । अण भातरा रमार थोडा ई देखीजे । खेतोजी मुळकिया
 र कैयो हू जद मरण लागू उण बेळा म्हारें वेटा पोतां नै मुलाय नी
 मूँ क म्हीनी सी बरस पूगणे रें पाछे म्हारी अरथी मे दो तास अवस मेलणा
 ते काम कर्या । तेलड्डी सरग विसायी खने अर दूजी मसाणा मे ।

फेरुं थारें दिनां तक रोजीना अंक, तास म्हारें तारें कारजां मे देवण
 ते परवध करिया ।

हू सरग ताईं तास मेलतो जासू । मुईं तो ही म्हारें भेळें तास खेले
 ! उणां नै रोजीना दीवणो सर कर देसू । खेलेण बलत सगळीं नी हेतो
 मारसू ।"

धा धात मुण नै उचळो पूछण आळो अर नजीक वीट्या भायला
 हस-हस रें लोट पोट हुवण लागिया । मोकळी बेळा ताईं हुमणो रोकियो
 रकयो कोनी ।

खेतोजी आनी फेरुं ताम खेलेण रो केवता । सगळीं भायला सांगे दुपारें
 मूँ मुईं तिच्या ताईं ताम री पत्ती चलती रीवती । खेतोजी मस्त पदकड
 हा । जद घर मूँ टाबर-टीगर, रसोईं त्पार हे केवता खेरो वावो केवतो,
 अंधाणो जोमो, उचळो देवता बी घडो तास रो पद समेटीवतो ।

मैनी जो ताम रा सात्ता रमार हा.....

अमल टिड़ी (अफीमची)

बजी करीब दस अके रै अनाजे अमल टिड़ी (अमजी बाबो) इनक बाबिरे कोटड़ी सूं निकळ'र टळ-डळ परता लिन गे नयाजी रै मिन्दर दरसन नै जावता तो बीच में साले री होळी माथ हड्डमान जी रै मिन्दर री फेरी अवस निकळता ।

मिन्दर रै दासी माधे या इणगी-उणगी दोठ्यां मिनखां नै आंगे चोरो १ दोख जावतो तो दो पैली सूं ही नाक भोव'र ऊँहूँ...ऊँहूँ कैवण लागता । दो मिट बोला-ब ला रैवता । थोड़ी सीक देर में कोभी कँतो वास आने, कोभी कैवतो अकूड़ी वासी । पण अमजी बाबो चिड़ता, रीसां वळता भुसळीवता मिन्दर रै थरकण जाय पूगता वारै दोठ्यां मिनख छोरां नै सिनकार देव'र आंनै छेड़ण नै आंगे कर देंवता ।

खाळियों वासै . खाळियो, SSSअरै खाळियो वासै । छोरा छंडा लारै सूं छेड़णरी वास्तै आवाजां लगावता क ' जोर सूं अवाज आंवती थूं वासी... थारी मां वासी... 'थारो वाप वासी ।'

आ कैयर अमल टिड़ी जी मिन्दर रै मांय पूगता । वठे मोकळी वेळा ताई हड्डमान जी रै चरणां में सरणां लियोडा वीठ्या रैवता । मिन्दर री फेरी रै पाछै सूं आवाज फेरुं लागती खाळियो पीपे में । विण वेळा इणां रै मूडै सूं बुरा सबद कोनी निकळता । मिन्दर रै वारै आयने सगळाने परसाद देंवता, अमजी बाबा परसाद दो .. अमजी बाबा परसाद दो । आवाजां लागती जद छोटा वळकियां नै पुचकारी देयने लाड-कोड सूं हौलै-हौलै परसाद बांटता ।

अमजी बाबो जात रा पुसकरणा विरामण जोसो हा । सग्या बालो रंग, सादहली रो कुरबो बर गाथी टोपी माथी रो । गोडा घई टे बपडे रो पछियो । हाथ ने पतळी सीक तरही राखता । गाल मोट्योडा । ही-धोडो घुळ्यां और ठुडी दाही हो । भांग खावण और अमल खावण रो मेसा रो बिसल ।

जा रो ब्याव हुयो हो, टावर टीं र हुस, पण भगव न राहया बोनी । सभाव रा भोळा बर पबकडा हा । जद घाने कोओ छेडतो तो ओ उपागी सात घोडे उबळ देवता । टावर चिदावता जद गाळ अवस निवाळता पण मायनी भातमा मूं नई ।

जद बई इणा नी बोओ आ कोवतो क'अमजी, टावर नै घर कुते नै मुंडे सगामो जितार्ई बी माथी चडसा, उण बंडा अमजो बाबो कंवता "जिण घर बाळा उण घर नई देवाळा"

अमजो बाबू रै पेटा पाप कोनी हो । अंक दिन 'मन' पानरी दुकान आळें भोरन न भोर राजा करण रो वेळा आंनं आम'र कंवी है— अमजी भायसा मात्र मने अंक सपनी आयो । म्हुं देख्यो'क रो मरग्या अ'र लोका मने जसोडाई तळाई आळें गंदे नाळें में ग्हास दियो । घारी खालह नै कं डग माथी । नाळें में पडया सडर्या हा । मने दया आयली । हु पानी बांरै निवाळें र लायो । पूणे बाा सुणी-अज सुणी कर'र दिनुं मे मूं गाळ्यां निवाळण लागिया । मन बीच-बीच में डणारी गाळ्या सुणे अ'र मारु माथी बांरै बांगली र खन रो कोनीन करे' पण अं दूणां चौगणा टिड-टिड करे ।

टिड-टिड करण अमज टिडी जी चुरपाव हुंक्ता क' आनी राजी करण कार मन मास पण पबकनी अनीउ माणण हटकर'र भैड जावतो जद आंरो दुसरो सात हुवतो । बांरो हिरदो मोग ज्युं विवस जावतो । पछतावो करती-कार्ती दन नै बोसी आलीसां देवता ।

अमजी बाबो भगवान रा पक्का भगत हा । निव नेम निभायां विना
 रोटी कोनी खावता । किने ताई आंफतां रो जोत रई उनी ताई निहमीनायजी
 रे मिन्दर, मान्नी माना अंर मुरनामक जी रा दरमण करनी जावता अर
 पाछा हाथ मे दही रो कटोरो नियोज्ञा खावतां, फेर रोटी-घाटी खावता ।
 अ सूंचरा चोगा हा ।

दुपारे रा दो वजी भाग घीवता । कुनीने रा चावल अर अफीम रो
 नुकरो लेवता । जे कदात अमल नी मिलतां तो आनी दिन उवास्यां लेवता ।
 ई कारण आंने अमलटिड़ी कंवता । अमल लेवती घेळा कोई आने देख लेवती
 अ लोकां ने आ कैय'र टाळ देवता 'क' जीवां जितो जजाळ रेवे ।

आज जद दुकानां माथी मसगरी या नसा वाजां रो वाता छिईं उण
 घेळा अमजी बाबू रो नव लोकां रे कंठां मे अटकयोड़ी रेवे ।

झाड़ाघर जी

1. सोदेवाजी बुनिया-मे खूब चालगी । प्राण थकल उवारी- मिनगी
 2. लोम-भाग उल्लू सीधो कर'र घर भरने मे दुगियार होयग्या । न्याव-
 3. घुनवाव कुण देव । आपरी रोटी हूँ से तोरा मने । भोला-भाळा घर
 4. मोघा मिनखा रो जमानो लदगयो । ..

कभी आ कैवे क भो वेठ पापी है । मेठ रे कारणें उधा-गूघा मे
 करीजे । पण आ बात मानोगे अर ना मानोगे । कोई जोर धींगणें- थोडे
 है मनवाणी होके । ..

जमानो फैसन रो अर भूल फैल सरचो कारण मे भी दीवे । कमाती
 थोड़ी अर सरच ज्यादे । आवै कठे मूं ? लोग मे नीवता बदलीज जावे ।
 छोटे मूं लगायर मोटे पार्दे-सै आप-आप रो घरो खालखाजी अर
 उलट-पलट मूं ही चलावे । काई डागघर अर काई उबीर । इन्तानियर
 होवो चावे ठेकेदार । बलपडता जाळी-भरोवा मे राग छोटे । ..

जितो काम-काज आजकल दलाती मूं चाने उतां गाली वैठ्यां २ मूं
 थोडे दी चाने । कमीसन रे कारण दलाळ लोग भट मूं मुरगा पकड़'र लावे
 देव । ..

पण भाडाघर जो भाग रो मन्नी ग जलम ईज है । चातारी जंते
 रग-रग मे भरयोडी है । जिको मेठ-भाउजार या बलमाणन भांरो पत्राजी
 मे फन जावे फेरुं बेगो छूटे मई । ..

भाडाघर जी रे दगाव मुगाजी । अक ठो ई नई च्यार-च्यार पाव-
 पाव । फूट्यां फूट्यां सपेद हई रो जान घोःषां धारुघांठी, गादका मे

अमजी बाबो भगवान रा पणना भगत हा । नित नेम निभायां विना
 रोटी कोनी खावता । जिने ताई आंस्यां री जोत रेंई उरी ताई निछमीनायजी
 रें मिन्दर, शान्ती माता अ'र मुरनायक जी रा दरसन करनी जावता अर
 पाछा हाथ में दही रो कटोरो लियोडा आवतां, फेर रोटी-वाटी खावता ।
 अ'र चूचरा चोखा हा ।

दुपारें रा दो वजी भांग पीवता । कुचीने रा चावल अर अफीम रो
 नुकरो लेवता । जे कदास अमल नीं मिलतो तो आली दिन उवास्यां लेवता ।
 ईं कारण आनी अमलटिडी कैवता । अमल लेवती वेळा कोई आनी देख लेवतो
 अ'र लोकां नी आ कैय'र टाळ देवता 'क' जीवां जिते जजाळ रेंवे ।

आज जद दुकानां माथी मसखरी या नसा वाजां री वातां छिडें उण
 वेळा अमजी बाबो रो न'व लोकां रें कंठां में अटकयोडी रेंवे ।

झाड़ाघर जी

सोदेवाजी दुनिया में खूब चालगी-। जाण, शकल, उधारी, गिनगी होवे। लोग-भाग उल्लू सीधो कर र घर मरण में दुनियाघर होयग्या। खाव-कुन्याव कुण देखे। आपरी रोटी हेटे से सोरा भेलै। भोळा-भाळा, चर मोघा मिनखा रो जमानो लदयो।

कभी आ कबे क भो पेट पापी है। भेट र कारणई ऊधा-मूघा से करीजे। पण था बात मानीजे अर ना मानीजे। कोई जोर धोंगाणै, थोडे ई मनबाणी होवै-

जमानो फैसन रो अर अलू फैज खरबो कारण गो भी दीवै। बमाभी थोडी अर खरबे ज्वादे। आवै कठे मू ? लोगा रो नीकना बदनीज जावे।

छोटे मू लगायर मोटे सार्दे से आप-आग रो धंचो, चालवाजी अर उलट-भलट मू ही चलावे। काई डागघर अर काई उकील। इभीनियर होवो ज्ञावे टेकेदार। चळपटना जाळी-भरोखड से रात छोडे।

जितो काम-काज आजकल दलाली मू धारै उप्पो म्वाली बँदुपा २ मू थोडे ई धारै। कमीसन र कारण दनाल लोग भट मू मुरगा-पकड़ेंर लावै ठेज।

पण भाडाघर जी आप री मन्नी रा अलग ईज है। चानावा आरै रग-रग में भरयोडी है। जिको मेठ-साऊकार या मलमाणन धारो पत्राळी में फम जावै फेले वेगो छूटै नई।

भाडाघर जी र दलाल लुगायी। अक दो ई नई च्यार-च्यार पाच-पाच। फूट्या फूट्या रुफेद दई री जान थोल्पा धारयोडी, गाइका री

बोले इतने में मन्दाकार का नाम आया ।

दिको दलियागो जीव आ के गयो में आसी बने दनामन्नां सोक
मादापर मा'राज भरो के जामो ।

भादापर मा'राज आद सूं गान चट्ट देसमी सोळो अर लाल ई पोती
पनी पैरल में मार्ग के लाज केसा में मुदय खड़कियोडा आपरे घरें ब्रैत
दिययो ।

आ के कपरे में भगवनी अर भेद रो तमबीरां लाग्योरी, नजीक अंक
दो आरयो रो गोपहयो, ज्यारै माये तेज गिनूर टाळ्योडा अर माळीपाल
जयायोडा होमी । सर्वे ननवार या गायो ।

भादापर जो रे आम जोत जळ्यो रेमी । भगत भजन-वाण्यां गावता
रेमी । भादापर जो गूद परयो देमी । आपरी जाण में सै हाव-भाव देवता
घट में आवे जिसादे करयो ।

जिका-जिका नूया आदमी आसी वै वटा ध्यान सूं मा'राज रो बाल्यां
नुणसी ।

अंकर सी अेक भगत आयो अर मा'राज ने बड़े दुःखी अर गळ-गळ
होयर पूछ्यो— भादापरजी मारा'ज म्हारे खेत सूं ऊट कौण ई चोर तियो
अत्रे आप कार्दे अुपाव वताओ नीं ?

मा'राज उथळो दियो— अरे भोळा भगत ! धारे मनरी बात हूं
जाणयो । धारो चिन्ता मेटणहार भगवान हूं । तीन दिन रे मांय मांय यारो
ऊट पाळो आयो रेसी ।

भगत कैयो— घणो हुकम प्रभू । हूं आपरीं गुण नै जलम भर कोनी
भूलूं ।

थोड़ी देर रे आंतरें सूं फेरें मा'राज भगत नै बुलायो अ'र कैयो—
भगत ! हूं कैवूं जिको सुण । चार सेर मोठ, तीन सेर वाजरी, दो सेर गावो
घी, अ'र खांड एक आध बोरी जल्दी भेजवा । धारो संकट भगवान मेटसी ।

भगत वीं बखत खूजे मांसूं पैसा देयर समान रो परबंध करवायो ।

भाग जोग सूं ऊंठ हाकई धीरे-धीरे धर जावयो । बीं दिन सूं आप परसिध होवण रै पगावियां माधे चडियां ।

अक-अक कर'र तो अगमारह होगी । जिके दिन सूं भाडाघर जी मारा'ज रा यवन मिलण गागिया, बीं दिन सूं ढोळै-ढोळै आदमी आवणा सरु होया ।

चोर, जुआरी, सट्टेबाज अर नमीबाज सगळें ई आरी हाजरी प ऊभा रा ऊभा रैं ।

मारा'ज जिके दस्तान में आपरो अलाडो जमायोसो है बी जगे अक अलमारी भी है ।

अलमारी में धूप अर होम करण रो समान मंत्योडो राती । सराव रो मोतल अर मई'न-मई'न पीस्योड़ी काळी मिरचा रो सीसी भरयोड़ी भी ।

खीवनें जाट रो बऊ हमेत अणभणी रैंगे । छोरी लायण म्याणी अर चतुर भी । रूप रंग रो फुटरी, भाग नाक रो सुरिक लायणी । ओळ सुधारणी ।

खीवले ने नित रो चिन्ता रैंगे । दो-च्यार भायला रैं खी भाडाघर जो रो परसमा रा पोया बाचीवणा मुण'र बीं आपरी बऊ रो लेजावण रो सोची ।

जिके दिन बीं लेजावण लागी उण दिन मोकळी भीड मचगी । खीवले रो बऊ भी मत में सोच्यो क' आ काई बान है ? रो लोग म्हारें गांती क्यू देली ? अक तो डोल मुस्त अर डूमरी आ लोगी रो भीड । विचारी भेन ज्यादा उहे-करे ह्यगी ।

चरित्र रो धोवी होवण रै कारण ताज सूं घुघटो निराळ्यो । पण भावला, अर खीवने भाडाघर जी रै अठै पूगया ।

मारा'ज ने आपरें आमण मारी, जम्योडा देव'र खीवले कयी-मारा'ज म्हारो भी संकट मेटो । हूं बोल दुखी-। म्हारें घर में लुगावी अणभनी, भाव भाडो सगावो अर निरपो दो क' ई ने काजी रोय है ?

गन पड़्यों पाछे भाड़ाघर जो घर सू बरै कोनी निकळी । बोकै मँ
 पहर मूँ ई बारी बाळो कापणो सरु होय जावै । बोरै तो कुत्ता अर घिली
 मोने । हुकरी रो ती भोरै येने नी बरदान है ।

मेठ मूघई अक दिन रात रा बोरै बजो बळी दरवाणं रो भाड़ाघर जो
 नै बयो । भाड़ाघर जो हुकारो भर लियो । बा बोन भाड़ाघर जो रो
 धरडाई ने मेठण बाळो अर बोरै विरोध करण आळो गुण ली । धी रो भी
 मोहो नाघयो ।

मममाण भोम मे रात रा बोरै बजो जके दिन भाड़ाघर जो भर मेठ
 जो पूण, बी दिन घारो पाणो तोलण आळो दूजो घादमी भी बठे भूग जाये ।

विण घेडी मू घोटो ताई काळा कपडा घेर लिया । सोधयो क' जद
 जद भाड़ाघर जो बळी-बाकळा तानर हेणे मारयो, हू भागर पूण जाणू
 अर देखमू निध पुग्मा रो मिघायी ।

भाड़ाघर जो मममाण भोम मे दिवने मूँ जोत जळाय'र रमगुल्ला
 परमाद बदाया । अके तानी बळी-बाकळा फेवया । अर दूगे तानी मूँई मूँ
 जोर-जोर मूँ भवाजो लगायी आव' आव' आव' ।

अवाज सुणते पाण ई मगाणिया कुत्ता दीडता आया । भाड़ाघर जो रै
 घना मे घोडो सरुको आगे पीठ तानी मुणोग्यो । बा घूम'र देखो तो
 अक बाळो छाया नाकनी दीये । भाड़ाघर जो रै चेर रो हवा उडण लागी ।
 बा बाळो छाया धरि-धीरे नजोक आवण लागी क' भाड़ाघर चांदी रो घाली
 परमाद आळी, बळी-बाकळा रो ठाव छीड'र घेका पट्टी दडवड-डडवड
 घोरया । मेठ भी डरयो दीडयो । बळी ने काळा कपडा घेरयोई आदमी
 मगडा करण भाडा मेळो कर'र परसाद हाय'र आपरें घरें बहोर हुयो ।

दिनूरो पर आळा देणे तो भाड़ाघर जो गे हुवार एक सी घ्यार
 दिवरो । पूरण-भाणन ने जावण आळा भायला जद आनी पुछयो क' बठेई
 डर तो कोनी माणो क' भाड़ाघर पूँ-भाणन बात बत्ताप दीनी ।

भाड़ाघर जो दम

दिक दिन काळा कपडा आळो

१११ भाड़ापर जी से पूजन आया, बी दिन सगरी रात सोलर बी
 बतायी । भाड़ापर जी से कामा से गिरफ्तारी सुलगी । बी शीके होके वीक
 होवन त्यागिया । कोरा कामर अर हरपोक ई भाड़ापर जी है । सुगानों से
 माय ब्रह्मणो से भंगो देज आरे बहवो हो है ।

मट्टो करणिया ने भाड़ापर जी आगन-पीचर भी बतायी । दस जग
 ने दम आगर । नैरो न नैरो गो मिरा ई ज । यारो पेट पूरती तो होवे ।

भाड़ापर जी पणा पड़योड़ा कोनी । बिच्छू रो भाड़ो जद कर ई
 मोको पड़ जावे, बी बेका जिको मंतर बोलो गो आग लोगो ने बतावुं ।

आगी रोटी ऊपर साग ।

उत्तर बिच्छू रस्ते लाग ।

आग रै पेट सातर कर्ई तरै रा सांग रनें । घर मूं बा'र निकळें जद
 गुलाब रो संट छिड़वयोड़ा, लाल कपड़ा पैंरयोड़ा अ'र जटा बचायोड़ा अिसा
 बीली साचे ई जाणे त्यागी तपसी होती ।

पींडी पक्कड़

जाणे दुनिया रो टाळी बटळ गयो । नीचत मे दिन-रात रो फरक
हयगयो । कुण जाणे कळजुग रो परभाव है या रोगा रो आपो ना'खीजग्यो ।
ह कोरो उपदेश कोनी भाठणो पावू, पण ओख्या देखी अ'र शेतमा मे
वीग्योडी घाल घतावू ।

टॅरिलीन रो कुमकोट अ'र पेंट पॅरुमा बाटा कंपनी रा जूना, पगा मे
कीमती मोजा पॅरयोडा, भिमा बीणै जाणै कोई रईम रा बच्चा होसी ।
मगेर रो घडावट तो पॅलवान दारागिह ज्यू, आंभ्यां मारणै भँसि री तरै ।
मू डो ज्यां टाचा दिपोडी घाळी वरणो अ'र केस काळा भंवर । नौकरी सू
आय'र दूजो काज करै इणगो-विणगो खुडिया खोतरण रो । अंगरेजी सें
ट्र रो म्यानो हे रोड अंगर्पकरी करणो ।

पण भायला आसू निजर बचाव र भागणे रो कोसीम मे रँबै । आप पक्का
पींडी पक्कट है । जिकै री पींडी पक्कीजगो फेर जाणै सडपाती लागी हुवै ।
आरी ट्रिस्टी अ'र छनिछर री ट्रिस्टी मे कोनी फरक कोनी । दूजा रो
परचो कगवणो अ'र निज रो निट्टो संकण में अेक नम्बर हुसियार ।
आप वात्या रा बालमा है । दो च्यार भायला जे कठई आपस मे वात्या
करता होमी तो अँ जाव'र आप आळो खुरपो अवग चतामी । जाणै खोर
मे मूमळचंद हुवै । ऊंधा-भू'घा घेमळा मारना रँमी ।

भुकने पामणे रा तो हुमेना मीरू रँवे । चुनाव रँ दिनां मे आरो पूछ
रँवै ई अ । गुड बिना चौप को पु आ रँ बिना राजनीति रे
तेल्लारा रोदाळ कोनी गळे । ने रा तो मालिक अपने-आपने

रहा। नीचे पाठे वाली वे भोग्यां में प्रकृतियों के भागों भी चोले
रहे। नया भोटा तो आगे पंजे में सोरा पकरीजे।

आप होठक-पुष्प भी है। आपने नूँजे में दूरी गीतो कोटन पूरे
कीही कीनी रागे। जने वालीं सुं दुजां ग पन वाक्योदे जाये। जीमभवा
जुं कागला-सीलगा वदुनी रैदी बिदा ई अं मरक माथे भठकता रैदी।
नाक आ रागे क' कुणयो भागलो अिरी होटन मे जाये। न्योतो तो अं
मूरज वाप रो रैदी।

चाय पीवण रो दो नाच पनी न कीधी दम दान। माथे-पीथे नै नान
में पूरा आंधट। लस्ती, लेमन, गानादुयो अंर दूय मिल जाये, चादी तात
धर टैदी आगे दिन मिलतो रैवे, आने मायले कोटि में कटिं न कटिं गुणता
ई करे। आंरो ध्यान हमेसा थी रैथे क' परायो अन्न मिलणो ई रैथे लोच में
दुखलभ है धरीर तो बार-बार जलम लेवतो ई रैथे। नमकन में रैथे रो
मतलब है "परान्तं दुर्लभम् लोके शरीराणि च पुनः पुनः।"

अके विससता और है। आपरो श्रेष्ठण रो इस्थान ठीक अिनी जग
है जंठे सूं मेळ मुळाकात आळा हमेसा निसरे ई।

वीकानेर में घणी चहल-पहल रो जगा तो कोट गेट ही हूं, दूजी नरें।
आंरो (पींडी पकड़ रो) आराण कॉफी-होटल रें सामे पान रो दुकान माथे
लागयोड़ा रैदी।

समाजवादी पार्टी आळा हुबो चावे कांगरैसी आं रो ट्रिस्टी में दोनी
समान है। जिकें सूं आने फायदो हुवे वीं रा गुणगान गावण में चारण अंर
भाटां सूं कम कोनी रैवे।

अं धरम रै काम में भी सोटा-लगोटा कस्योड़ा तयार रैदी। भजन
कीर्तन में करतोळ छंमछंमा लैयने सगळों सूं आगे रैवे। जे कदास चंदो
करण रो काम पडै तो ओरो ध्यान थोडो बोत आपरे माथे लगावण रो भी
हुय जावे।

जे कदास कोअी आंने वीच में टोक भी देवे तो आप सळू सट भंस
मारण रो भी काम करण नै हाजिर रैवे। गाळी-गळोच तो आंरी भासा रा नैणा

है। जे कंगू ई जिद बाद हुय जावै तो दो च्यार वक्खोही अगरेजी गाल्गी
 फाड़ण में भी खूब कोनी करे।

पण जठे वीठण रा डेरा डाम्योडा है उठे हटेई कोनी। अंक भायलो
 ई जे चाय पावण नै ले जावै तो तीन घटा रो गयी। घेलटो जद नीठ पीडी
 छुडाय'र जावण रो कोसीस करे दर्त में दूजो दीख पई। बारें सागे भी
 ल्यार। दूजोई भायली रो भी पींटी छ्वाटी पकड नीमा अ'र बीरी परसमा
 कर'र सौर भर रो ऊठ-पटाग बाप्या रा गुलछर्रा छोडना रेसी। लाज-गरम
 तो आ मू गरम कर'र डेरा खूष करगो। सास्त्राराम जी वेद बिना लग्गाव
 रो पुटिया वृण देवी।

"मीरो माये दाज घिसो तो घिसबादै
 मंगळव सरने लोक हसे तो हसबादै।"

आ केवन मीरपोडरि पोडो पक्कड जी है।

भोर में छः बजी मूं लीं'र दम बजी ताई अ'र मिश्या साडे पांच सू
 रान रा बारें या अंक ताई लोग-भागा रो पींटी पक्कडना रेवी। होळो-हीळो
 छा रो मडैनी रा सदस्य बटता ई जावै। भ्रता-पट्टी अ'र हत्ती-त्तती र
 मिवा और वात सा गीण रेवी। फूटरा फर्रा थोपना दीही, पण लोग रो,
 भायलां रो अ'र नेताबा रो रिस्टी में बिमा'क है, कोनी कें गनू, साहित
 कारों रो रिस्टी में अ आपरो चिन्नाम अजूणा ही राखै।

गुरुजी सा

गुरुजी सा १११ - " १११० मिनटो हा भाजीजी सा -...हां ?
 चाकर गुरु ने बोलाही म मोकळा मिनत ओळखता हा । ईं रो नांव
 मंत्रियां गुरु पंडितो । रंयवियां वारंगुवाड रो । वापरो नांव बोधिया
 माराज । अंक मोटो भाजी काळियां अर पूजां किमनीयो । दोनां भी ईं ईं
 अं कस्यो हाल गाई जीयो । गुरु यानपणें मं घापने घर में सगळा भायां सूं चोतो
 दृगियार अर मगभदार मिणोज्यो । गुरु रा वाप बोधिया माराज फरसोळी
 नळाई भाधो मिदर वा पूजारी हा । ई कारण वट्टेज रंयता । आं रं परिार
 रो मरचो विरत याड़ी माधो घालो । वारागुवाड रं वीचो वीच जवरेतर
 मादेव रो मिदर विराजें, उण रो पूजा करण आळा गुरु रं ईं घर रा है ।
 ज्यां तो गुरुसा गुरु पाठ-पूजा विरत-वाड़ी रो काम-काज आपे कर लंवता ।
 मंतर एण रं होळां माधो रंयता । मडमन, रुद्री, गीता अर तीनू काळ रो
 मिड्या आ रो सूं जवानी याद ही । जद-कदं विरत-वाड़ी में जजमांनां अं
 जांवता आं सूं ही राजी हा । ही हुळस-हुळस रं आं खने कथावां सुणता ।
 आं ने गाभा भी चोखा पेरण रो घणो कोड हो । सरीर में ठाढा जवान
 दीखता । आं रो कद पांच सवा पांच फुट रो हो । रंग गऊंभरणो । केस माधो
 रा थोडा भूरा सी रंयता, बाकी दाढी मूंछ्यां भूरी अर छोटी छोटी रंयती ।
 केस भूरा दीखणे रो कारण तेल नईं चुपड ने रो हो । लुखासी आं रं चैरं
 ऊपर दीखती । असो गुरुसा रो सभाव ही हो । बडा-छोटा आपरो गळी रा
 हुवी चावें पर गळी रा सगळां ने वडी बोली सूं वतळावता । भाइसा,
 काकासा कैयं विना कैनी ईज उथळो कोनी देवता । विरध लुगायां ने मां सा

अर आरगु छोटी छोटी के देव ता बँवर मुजगा बोलना । पर रो काम
 बाज करण रो बानी मुजगाई दगा रो ही । ई बारण मुज गा रो गरमता
 नै आरमो करता । गली ई लोना मु मुज रो हवेव भापो ही मु मुज
 बिना पीव पुरीने बोवनी, बिना दग रे बिना बँगी भी दाज गली बानी ।

एव मुजगा रे मारी दग ताँ रो परगना रा दिन भोरा बरग ही रेवा ।
 बन्नी नै देर तादी, बिगली नै देर तादी बोनी । मुज अँर अ-दर बिना
 रोरो नै दिन राग उलाग कर बाने भी गो राग तादी । की बिना बचँर नै
 राके । हट्टुमानरो बिना बोत्र सगरी आला हा गग छामटर रो दगा उग रो
 भी मारी । बानी दही अँव गागो बानी मोचमो बंजा ।

मुजगा रो भोगो दगा टिरगो । रोरो नै नया बाजा तागे भाग
 पोट'र पीवण रो भाग्य पढ़ी । बने-बने तो भाग छोडा अँर पगुरा
 रञ्जोरो भाग पटगी । बनेई नवरगों त्रिई मे मजियो भंज'योरो ।

नने बाजा रो मर्या मे मुजगा भोगा गिरावट गिगीरना । बदे सोब
 भाग पीवण नै नई मिलनी तो अँ सीपा सरणाट बननी बावै रो कोटरी
 पढ़ना । बननी बावै पणो मोक धूमर बडे ई बीनपी । बननी बावो
 मजळगी मिलन हा । आरी कोटरी मे नगे बाजा गो जुट मज्योरो ही रैवतो ।
 अँर-नीरा नरधु रंरो नै कोटरी मे बड़ने रो भोकर बोनी हो । मंड सत्राकार
 भी बडे भाग पीवण नै आवता । बारे पटा भाग मुट्याङ्गी रैवती । आवै नै
 हाथ रो अँतर मिळतो । गरीब मुजगा नै सम-समी माथे मांगने गर्दगा भी
 मिल जीवता । त्रिमो हो बनरो बावै रो सगाव ।

जद वै मुजगा नै आगे मूँ आवने देगता तो विसरो पोंज'योड़ी बोली
 मे मुजगा नै हेनी मारता-मुजगा हाडिहा । मुजगा कैवता-ही बावाता हाँ-ही
 धाज तो भाग पारिने । बननी बावो पणै हग्य कोड मूँ उणाँ नै भाग
 (बूँटी) छाण'र पावता । मुजगा जद भाग पीव'र जररो जमावता, केर
 पाछा रमना-राम हुय जावता । गली मे मिलण आला रोग मुजगा खने
 जाय'र मोत मुणावण रो कैवता । योने बतलावण रो मस आ हो..... ।



गुरुसा नेसे, भगवत पावे जइया भाव मेरी ।

गुरुसा नेसा जइया आधीमन्ता । फेरे पीर रकते नुं गाठकरी ।

गुरुसा नेसा जइया ;

करोसे जे मेर दीवारी से मोद ।

गुरुसा नेसा जइया ।

नाभायण जावे जइया, ज्युं माग्यर मे सारी मरपी,

नामे मग रोडयो जगवापी ती भाई जइया विरता ।

गुरुसा ने ती मीन पुणे रोडयोती ।

गुरुसा सारी भिन्ने मे अडे जद गो पूरे भक्त्या-पट्टा में हो ज्युव मीन मनायो । नागे विरता रा मीकरी रपिया पापी नी ताई देवता । घणो मीलीन हो । नोग इण रे वारं इण-कदरा पुमता ज्युं गुट रे वारं मारया भणते । गुरुसा प्रेम रा भुगता हा जद तई आ मूकी काम करणो हुयो तो गुरुसा नकारो करता कोनी । नुंमे वाज वजार नूं आं नुंमे मू भाग मगवाना । अक नाइकल दराय देवता जलदी मुड़र आवण रे वारन । जद अं साठकल माथे सवार होवता थीं देळा इणगी उणगी अ र आम-सामे चाकं कानी निजर दोडावता । गाडी पूरे वेग नूं चलावता । भांग रे ठेकेदार नूं आछे तरीके नूं भाईना काकोसा कौवता वात करता । ईंधो तो ठेकेदार आंने आछीतर जाणतों । आं रे सभाव नै ओळखतो हो । पण आंरा मीठा-गुटका नुणणने आं नै भांग दो मिन्ट देर नूं देवता ।

पैली आं रे मूढे नूं दो च्यार अक गीत सुणता जद गुरुजीसा नीत मुणांवता-मुणांवता वात याद करता तो आं नै आपरे काम रो पूरो ध्यान आय जांवतो । ठेकेदार नूं खथावळ करर भांग मांगर इणगी-उणगी देखता सीधा वीं-जगै ईं भोंत पूगता ज्युं पंखेरु सिड्या पड़ी आप-आपरे आळणै मे पूगै ।

गुरुसा नै क्रोध आवतो जणै करै ईं सारु रैवता कोनी । आ वात सांची है कै क्रोध चंडाळ हुवे । अक दिन ओभिया माराज गुरुसा नै घणो

वग करिदो । जइ गुरमा ओभिया माराज सू भिइया ।

होल-डॉन रा ओभिया माराज पूरा है । गुरमा हाथा-पाई कर्न
करिया । आ सू पोच नी आया जण दीड'र मिदर जिई मे आप रचना ह
बइया । ऊपर सू भाटो बगायो । ओभिया माराज थोहा सीक बचिया ।
नई तो ओभरसोल देवता । जइ ओभिया माराज हृत्ता नै पकडण नै मिदर
रै इगळें चटण लाग्या इत्तै ई तो गुरमा ऊपर सू कूद'र नैतीसा मनाया ।

आगे पिरक्तन भोजी ही । दिन दुलिये घूम'र पाछा आया जण
ओभिया माराज सू गेत्रीना . वोनै ग्यु घोनण लागया । आरे पेटा पाप तां
कोनी हो । बई बसू ई सइया भगडना कोनी । बोनी रा ओछा बोरा बई
नैया कोनी ।

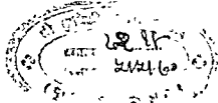
जीमण-जूटण री चिन्ता, उटण बँटण री चिन्ता रती भर कोनी ।
जीमण गे ग्योनो मूरज वाप रो हो । जडै-बई गळी गू चळ्या मे जीमण
हुवनी गुरमा उटै त्यार । टण सीर रा घण त्वरा लोग आनै जाणता हा ।
मनासि गी बात ही कोनी ।

गुरु सा नित नेम रा पकरा हा । विना स्नान रोटी कोनी राबता ।
दिनूगै उठ'र निमट-निमटाव'र दातण कुरला कर'र पीतळ रो 'चर' नळ सू
भर'र लावता । फेरु साभा समेत स्नान करता । साभा पेरिया पाछै पोलना
कोनी । विरल-वाड़ी रो टको-पईमो, मोनी-चादी सगळा आपरी घोनी री गाठ
में बाघ्योडो राखता । ई बात रो वानै कॅरोई विमवास आवतो कोनी ।
अंक दिन मूरदामाणी प्रोहितो री बगेची मे आ रा नै पईसा खोज'र आगे
मा मा नै देरिया । गुरमा नै आ वान पमन्द लागी कोयनी । दीड'र पुतिस
में रपोट लिखायदी । थानैदार नै जाय'र कैयो कॅ "साईसा भगना सा नै
मुझे नूट लिया । सोने चादी री नदी बँवायदी" आप भाइया हालो, नई
तो मिलण भर रया हैगा । थानैदार, इनकबादी करी घण, वान, मे, साज कोनी
ही ।

इण रगत आळा हा गुरमा । मोटे-मोटे, छोटिये री प्याऊ, टिगाळ

भैरव मा गगोलाक नालाक माथे भांग पीवन जे भूमना रैयता । कां रो जी
 जू चरिमोही मो जगना । एते निगे मे लोना रो मारणा हे के गुहसा रो
 के क गुनायो मू मनीय हो, उगु रे कारण थे भिसा सेणा-गैला दीतन
 जागया । की अत कोरे क कावाया मुनकिया माराज रे परलोक सिधारण रे
 बाद गुहसा रो निभ भरसीजगयो । पण अ से वास्यां होयते भी गुहजी सगळो
 मू प्रेम करना ।

गुहसा मरगलोम मिथारया, पण रे पविस्तर धरती माथे आपरो अंजो
 जस छोहया । लोम-मुनायां, देनां भागा से रे होठा माथे गुहसा रो नाम
 हाल तांरे अर्थ । गुहसा ॐ ॐ ... । उधळो मिलतो हां-सा ॐ ॐ...हां...
 भाजीसा ॐ ॐ मां सा ।



पूरणियो भंगी

“रोटी त्यावां अन्नदाता । तूच फळो फुलो, भगवान धांगे रिजक
बदल, मोकळो पैदा देई. म्हारो भी पेट गुजारे धारें भाग सारें घानतो
ईश, दापा मुण मूं मित्रें” आ बाणी बोनतो रोजीनें, रो घर रें मनं स्वडो
ह्येंर पूरणियो भंगी ।

बोनी इमो मोठी बोलतो जाणें मिमरी घोळियोरी हूबें । गटक साफ
करणिया घणाई भंगी होमी, भंनतो भो, पण पूरणिये जिगा मुणी मिनग
साह ई साधमी ।

श्रीक साडी थ्यार वजी भांभरके रो मूतो उठेंर डिपटी आळी, गटक
आळ्या अंर गटक आळो नै मीठी रागियो रें माने मोद मू जगावतो ।
बग्नी आळा से भगी बो नै सरपा रो डिप्टी मूं देणता । गे पूरण साताज
पाय लागूं बँयर बतळावता । आगीग रो भोळो भरण मे भी पूरणीरो
बनी बोनो रागतो ।

घर मूं बाई निवळनी जद माथें मममन गो लहेंद वेंतो पैरणी घोटी
पपक बोळो अंर गारी रो घोटी घोरी, जूना भी मू बा अरोट । मू हो
बदल घट्टो अंर मूण्णया बड बाबरी, मोटी जामें मूगो वीलियो हूबें ।
वानां मे बोलरो माकड्या अंर वादी रो भंवरियो, लई मे वादी रो दोरो ।

भाडू हापा मे हमेगा रागतो । बाबें मुबो दिन मुबो पण्ड बडू न
हूबें ।

जिकें मोहम्मे मे भाडू देवण नै पूरणीरो जूगतो बटे ग मोद-घाण
बघाई रें हाचानें मे मं निरपण विषा । बटे मू ई जदेंदार के भोळो

सुखी को अन्धकार की काली छाया है। सुखी के सामना सुख में सुखी देखा।
 सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार
 में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार
 की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है।

अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार
 की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार
 में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है।

अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार
 की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार
 में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है।

समझदार भंगी को अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार
 की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार
 में सुखी के अन्धकार की काली छाया है। सुखी के अन्धकार में सुखी के अन्धकार की काली छाया है।

पूरणीयो भंगी टावरों में पुरो सदैव राखतो। होळी, दिवाळी माथे
 रंग अर पटागा अर आसानीज माथे किन्ना-मंजा टावरों नै दरावतो हो।
 यन्ती रो कोणी अणजाण वाळक जे आ नै कैय देतो- पूरण वावा पैसा दो,
 दिण सर्म आपरी टांट मांयनू आनो-दुआनो निकाळ'र दै देवता।

मेळे-डवोळे रो सोख ई पूरणीयै नै कम कोनी हो। सुजानदेसर ई
 गांव में रामदेवजी रै मेळे अवस जावतो। रामदेवजी रो घणो भगत हो।
 नारेळ-पतासा उणां रै मिन्दर में लेजाय'र चंढावती ई।

गौरी जी रै मेळे माथे तो कोणी न कोणी आपरी वस्ती में उच्छ्व
 करवावतो ईज। भगति-भावंना में चूक कदै कोनी करतो। लगन रो पक्को
 आदमी हो।

बोतानेर सैर भूँ कोइमदेनर भैरु जी रो मिन्दर सोझट मोज र अई-
 गढ़ है । बज्जधा गाडी किरायै रो विण माथै मैला मैला छत्रो डांडा अंर
 आपो परवार गाड़ी माथै बैङ्गोडो ठैठ ताई सगळा नै दरसन करवावण नै
 नै जायतो । भैरु जी रो मूरत माथै तेल, सिन्दूर अंर माळीपाना घटापर
 फेर परसाद करतो । आपरै कुटुम्ब-नबीलै रै सोगा नै परमाद बाट्ठो ।
 आग सगळा भूँ पाछै अंगोगर्ता । रात भर भजन थाण्या गवावतो अंर जागण
 करतो बीतावतो ।

पूरणीयो आदमी त्वरो मैनगी हो । मैनन भू गमावणो अंर स्वाध्या
 ई आपरो फरज समझतो ।

गळो-गुवाइ अंर सङ्क माथै जद भाइ लगावतो बी समै अेडो भू
 संयनै धोटी ताई पमीणो डील माथै बैवतो ।

पूरणीयो कम सरचाळू अंर मिश्यान भूँ चाणियो हो । हाथ
 दाळर होम कोनी करतो अंर त्रिनो उपदेश देवतो । धाय-गान रो गरचा
 कोनी करतो । गुण रो दाळ रोटी भू ई संतोष गावतो ।

विरादरी बाळा दोगे वरुन मे वाम निरुत्तारण नै पूरण माराज
 कने पूगता अर कैवना 'माराज, छोरो बीमार है रनिया रो मरण जग्गन है ।
 दिरायो तो आवरा गुण जलम भर कोनी भूउ ।"

पूरण माराज जवाव देवना 'देग बेडा, ई वान रो इतरो मोन कइ
 करे, ई अवार गृहारे लेटा तनै भू रनिया दिगल देगु । पाजा पूणारण रो
 बेगी कोमीग करे ।' पूरणीयो हु ग गुण रो सापी हो ।

ध्याव-भगार्ई, धीमारी-जीमारी माथै पूरणीयो विगारो बाळा रै कोन
 वाम भावतो । एजारो रनिया रो जमानत देवण मे माथ मे मउ कोनी
 लावतो । रनिया नै मिनग रै हाथ रो देन मनझणे ।

जाति मे सरदस होवण रै वाग्ग सङ्गिना भू उला रो पदमदाय
 विगारवतो । स्वाय करणै जद कइ बीटो तो दूर रो दूर अर दापो रो दापो
 करतो । विम रो पणसाण कोनी लैवतो । ऐ एत दाळा रै रोड करण उा

दी मित्र । फेरनी मुनायके सूँ पेनी आ बात तो फेरनी ईज क' गगन वोन
मानदी अर मीठा सोमि सोम ।

पूरणीयै रै मार्ग दो भावना हंसना देवता । अंगे नात नोकडियाँ
अ'र बिचड़्यो ।

भोकरियाँ तो डीला-दाळो अ'र बिचड़्यो कटुक आळो । बिचड़्ये री
मुनय्या बिचड़्ये रै डक गवा ही ।

यजार सीधे गरीदण नै जायना जद से मार्ग । पुरणीयां घणी भीड़
नै देग'र अयातां देतो घालतो "मरको बाबूना, यावण दो सेठ सा'ब
अळना होयां मारिना, मैनर नै रस्तो देवा ।"

जद भीड़ में ऊभा मं लोग छेदे हट जायता अ'र डणन रस्तो देवता ।
दुकानदारों'सूँ चीज घन्न गरीदतो जण बोलतो— सेठों दाणांमैवी,
हळरी, घाणां री काँई भाव ?

दुकानदार जद वाटां में लाग्योष्टो रैवतो वीं वचन फेर मीठी अवाज
में कँवतो "मुणो घण्यां म्हारी अरज ! थांरो भाग वधै, भगवान थांनै
मोकळी पैदा देवै, थांरी कलम नवाई रार्य ।

दुकानदार सीधे भट सूँ देयर रुपिया लेलेवतो । सिध्या सवेरै गळी
रै कुत्तां नै रोटी नांखतो । ईं अवाज जीवां रै खातर पाणी री कूडी भी घर
आगै राखतो ।

अेकर आप सड़क रै काम काज सूँ निश्चंत होय'र घरे जावण लागो,
विण सम अेक भैसे आळो मंतर भैसे नै खड्क रै हंटर सूँ घणो दोरो मारतो
हो । पूरणियै वीं नै देख लियो । बस, फेर क्या हो । क्रोध सूँ सूँडो तांबड़े
भरणो हुयग्यो । वीं भंगी नै अैसी गाळ्यां काढी— साळा हरामजादा थांनै
ईंयां मार पड़े जद किसै भाव रा विको । थां नै मरणो कोनी । क्यूं आं
जीवां री टुरासीस लैवो । जे भैसे नै अवकै मार्यो तो म्हारे जिसो बुरो
कोनी है । भैसे वाळी नीची नस कर'र टुर वईर हुवतो ।

उनाळै अर चौमासै रै दिनां में रात-रात भर आपरी वस्ती रै मिदर

सारे सबद-बाण्या बोलावतो । तबत्ता, पेटी, नगाडा, भाऊर अर भील
बयावण आळी मिदर मे हमेमा हाजर रैवनी ।

देवतावा नै भी इसा भगनां री जररत रैवै. मोकळा बरस तो कोनी
हेवड घ्यार अंक बरस होया है पूरणोवै रै शरीर बरतीजै नै । वो इयै
मोकळ मूं बीसरै लोक पूगग्यो, पण बस्ती रै भिनत्वां नै अ'र जाण-विछाण
जाळ्य रै मन मे हमेमा री अंकें याद बण'र रैग्यो ।

लालियो सैसी

मारुं मँसी पलियो नामपोटी काम में लकटी रो दूकटो देवायोटी, हाथ में जातु मेण रो मुचपोटी मचयो लियोटी, मोटी-मोटी आख्यां आळो, कली-कली नामपो रावयो आरुं ई लालियो मँसी । पूर-पूर नामा पेरयोटी, काटोपी पमरगी चारयोटी जई जीमणवार, तीन घटां अर ग्यातां हुवं वटै-वटै पूग जाय ।

मेठ-नाहकानां र छोटा-छोटा छोरां नै रमनियां देय'र अँठ-जूठ रो पानळ्यां मारुं । लोभ र कारण लालियै मँसी रो ज्वानर टावर-टींगर जाण-बूझ'र अँठ जूठ नाम्यता । जीमण जीम'र पानळ टयै नै ई देवता । लालियो छोरा ठगोरो पैलै दरुं रो हो ।

बड़ा आदम्यां नै मेठ माव अर छोटा रो कंवर माव कंवर ई बतलावं । मगळां सूं मोटो बोनें । बानां सूं ई छोरा-छंडा नै सूंहे लगारुं । दां र कैवण रै मुजब ही खेल्'णा लाय-नाय'र देवं ।

सैर में जद ओक दिन ओक नेठ तीन घटां रो जीमण करियो । जीमण नै मगळो सै'र उमटयो । लोगां रो जूती रुवाळै कुण ? आ समस्या पैदा हुयगी । कओ सैली-सैसण्यां वँटी ही पण विस्वास कुण करै । लालियै रै मभाव सूं सै पतीज्योडा हा ।

ओक छोरे री निजर मैलै पलियै सूं दकयोडे मू'हे आळै लालियै सैसी रै मारुं पड़गी ।

बो वठीनै दोइयो अर बोव्यो- "लालिया बाबा थूं म्हारी मगळां री जूत्यां रुवाळीस नीं ?

लानियै पाछो उबळो दियो- धणो हुकम अन्नदाना, म्हारी करतव
 वार्द है ? हू तईं रखाळीग तो बीजो कुण रखाळमी कंवर मा'व ? धागे
 नाम माथे म्हारी पेट पळै है वावू सा'व ।

परममा रा पोया खोळणा लानियै चानू करिया ई हा क' छोरे कॅयो-
 'लानिया बावा, हूं धां रै पातळ जेयर आमूं थे म्हूनी रमनिया देमो ?

लानियै कॅयो- हा बाबू मा'व, थारी भगवान हजारी उमर वरं,
 मोकळो धन ईवै ।

छोरो कर्दें चट हो । विण कॅयो- धं म्हूनी किना रमनिया देमो ?

लानियै आपरै भोट्टे माय मूं दो ध्यार रमनिया दिग्वादा, अ'र फेंक
 रव्वट गी दइी । दडी देगता पाण छोरे रै जी मे लोभ बह्यो । जीमल
 माय ओम्ह्यो अप जीम्यो घगूं कर'र उठ्यो । हमेमा मू आज बोसी अँट-
 जूट लाय'र लानियै नै द्रीवी । रव्वट री दइी सेव'र छोरे ठोका मनावा ।
 लानियो मणो ममभदार भी । किनी डग छोरा पटावणो राजी करणें रो
 मो मंनर मीळ्योडो है ।

निन-हमेग अँट-जूट सेव'र आपरी बग्नी मे जावै । बग्नी आळा नै
 मीटो-जूटो बेष'र देमा राडा कर मँवै । मरवाळु कम हुकण रै नानै पैगो-
 पैमो जोडतो रँवै । इवै रै भावें ती जीन मरो बीनणी मगो जोमी रो टको
 म्यार आळो जात ईवै । नेम मूं कपिया भेज्ता कग्लो ईव । मरवावै नुशा
 पैमो ई बोनी । चमडी भळें जावै पर दमरी नईं जावै ।

लानियै रो परवार छोटी बोनी । छोटे मूं सेवर मोटे तक नै मारण
 खावण रो काम-काज करै । पैमन मरदूगी रो मईं । म्यार जात होवण रै
 काण्य बोडी ममभ आळा तो दिनु ये कामपोदा मिज्या नै मराव पीव'र
 म्योव देवणा । बां रै निवै तो बीरी मीवै तीतर माय वारी रो पन पण
 त्राय आळी बाण हो । पण लानियो बडो-जुडो होवण रै काण्य आर्त-पण
 रो मा सोवतो ।

बिचारी मे भी मरने-मरने मरखो मरवावण मे एर काट'र होम बोनी

काम । गाँव पहुँचकर वे कार्तियों को कोनी आनेवाँ । सा आरती मारी
जायगी । कार्तियों के साथ सम्बन्ध में पूरे वंशुम ।

सुशमण्य गाँव में पिताजी मीठ्या भी बनी । समझी वस्ती जंगल में
जंगल के एक हिस्से में । कार्तियों को भूतनी के पत्ताने में नैसी ही सीसी
के । कोनी भी मीठ्या अन्तर्गत कोनी के ही । गाँव से भाड़, कपड़े से
के साधन, सब ही से वाद्यमय तो बनावे आ से मुभायी । डॉक्टरों से छपपे
के ही कार्तियों से मुहूर्त बनावे मिलता ।

वे जैसे गाँव पहुँचकर से आत्रना अरु भान बोवण से बीजनी
बनावे । से मेवनी ।

मिश्रा पढ़ी छोटी-छोटी शौर्या सिध्या माता से गीत उनीरे । वीरे
पढ़े देवतावा से, मोनारी से आरत्यां गार्ये । नानियो तो कारी मांगण-
सावण से काम आर्ये दूजो काम पांगो से समझें कोनी । वस्ती मूँ आठ-
भाट दस-दस मीठ्या ताटें जीमणवार हृथे जट्टे पूरे उज ।

नानियो मस्त मोजी जूँ रे । निन्ता फिकर अँटै-छँटै ई कोनी
राटी ।

पण से दिन किता सरीसा रेथे । लालिये से वूढी मां सुरग सिवारी ।
गिरादरी आळां नै मां लारै औसर जीमावण खातर मनमें नित-हमेस बातों
पढ़े-तोड़ें । जे कदात सगलां नै नई जीमासी तो भायां में नाक कटसी ।
भाई सगळा धुका-फजीती करसी । आखर लालिये ओ निस्वै कर्यो क'
औसर वंद हुवणो चाईजे । वूढकी मां लारै जीमण जूठण कोनी करियो ।

आपरे भायां नै लालियो नेक सलाह देवै । कुळ से मरजादां में रैवणो
अर लैण सूँ वै लैण नई हुवण से उपदेस देवै । कण-कण जोड़ने सूँ मण
हुवै । सुई लैण मार्ये चालण सूँ आज दिने लालिये रै खने सत्तर अस्सी
हजार रुपिया नगद है । सोने चांदी रै जेवरां से भी भरमार है । पास-
पड़ोस से गाँव आळा से जाणै है क' लालियो चोखी आसामी है ।

सेर से अके साहूकार से अके दिन चोरी होयगी विण पुलिस में

रफ्त करी जिका जिका मायै बैम हो या रो नाव भी उण लिग्यायो ।
 मानियै मैसी रो भी बी मे नाव ।

• पुलिस पूछ ताछ करण सारु आयी । लालियै नै थानेदार बीरा मगळा
 भना पना पूछ्या । फेरुं बीनै कचैदी हाजर हुवणो पड्यो ।

कचैदी मे लालियै भी आपरो उकील खडो करियो । जद अदालत मे
 पूछ्याछ चानू हुयी । विण बखन पोलिस रो उकील ई नै पूछै- थारो कार्ट
 नाव ?

लालियै उथळो दियो- धन्नदाना म्हारो नाव लालियो ।

• 'कार्टे जान ?'

"मैसी ।"

"रैवै कट्टे ?"

"पुरामसर ।"

पुलिस रै उकील फेरु इण नै माऊकार रो चोरी करणै रो कागप
 पूछ्यो । लालियै उथळो दियो-माइना, म्है आज ताई कैरो टै नू वो पईमो
 कोनी उटायो । भगवान रो अर आपरो दया रै कारण म्हारै पैमे रो कमी
 कोनी ।

उकील कियो- 'लालिया, पैमे आळो कार्टे चोरी कोनी करै ?'

लालियो बोल्या- माइना, आपनै म्हारो विस्वाम किया होवै ? ह
 पग्नी भाना रो अर अदालत रो सीगन गाय'र कै मकूँ क चोरी आज ताई
 करी कोनी । म्हारी जात रा तोग सै थारै म्हारी साख देवण मारु उम्मा
 हें नई' पनियारो हुयै ती उण लोगा नै बाप पूछ सको ।

पुलिस रो उकील तो आगै कोनी घोल्यो, पण लालियै रै उकील
 आपरो मानव सबूतां सगळी जज रै सामे हाजर करी । लालियै रो मानव
 देवण नै लोगा रो जुट देल'र जज अचू भै भरीग्यो ।

जज नै पत्तो लागियो क लालियो सैमी गळ-भळो मन्वपदि हूँ । नगद
 देवण रै धनावा ई रै दो-दो मोटरा भी भाटै रो चालै । लालियो बोर्न

दिके आछो हे । सधनी अर नेव । सुकर्म नी फेमनी लालिने री खानी
लेयो ।

मन नी जइ हमेमा हरी री । सोवण-मावण, लठण-थैठण अर सावण-
पीवण री सभे आदमी ने ध्यान नीवत री सफायी अर सधनी नानी रीवणो
नारुजे आ वान लालिने लेगी आप री याण मने वचण मे सीगी ।

अवस्था नी अवा'र अणजे साठ-थैमठ ने दुयग्यो दुसी, पण मांगण
अर सावण आछो काम काज लेगी छोटे । परवार आछा जमाने ने देवते
मांगे सावण री थंधो छोड दिवो । आप री काम काज सभाळ्यां बँठा हे ।

पण जीमण-जुठण आज भी जद कठी ई होवे अर लालिने लेगी ने
सालम पट जावे फेरुं ध्रुव चुके ती ओ चुके ।

नागी तवलो, नागी पोनाक अर वनल मे देवायो'रो लकड़ा री दुकड़ी,
साथे पलियो नाक्यो'रो, पगरसी रगडतो आवतो दीसती'ज । असो हे
लालियो सीतो ।

आंटियो वावो

बूढ़ा माइता अर देवता पुरसा मे फरक कोनी । हिरदै सू सुद्ध सभाव
 य भोळा अ'र ठंठी-ताती ना देरयोडा हुवै । टावरा नै हमेसा कोओ न
 शोओ अनुभव री बातां बतावता ई रैवै । आछै मारग चालण रो उपदेस
 निव देती । चावै घर रा हुवो चावै पारका । उणां रो द्रिस्टी मे से समान
 हुवै ।

आजकल रा छोरा वा रै भासण-उपदेसा नै रेडियो बकै ज्यू बकणो
 सभकै । कौणो मानणो तो कोत दूर रैयो । बूडिया आ समझ'र चुप हो
 रावै क अ नू'वी सदी रा नूवा छोरा है, आ नै ज्याश कवणो-मुणनो चोखो
 गिनी लागै ।

अिसा भोळै-भाळै सभाव रा सन पुरस हा आटो वावो । आंटियो
 गव तो आटी टाग्या सू पड्यो ।

घाटो वावो घर आंटकी जाळ दोनु परसिध है । रग काळो कुट्ट जाणै
 गय लगाये हाथ काळो हुय जावै आटी टाग्या, चैरो सोफळिये ज्यू
 क्योडो, तीखो नाक, मांय बड्योडो आख्या, काना माथे लावा केस, हाथा
 र'र पगां मे अस्ता रुं, जाणै आगै सू रीछ दीपता । अंधारी रात मे
 केकल-हुकल छोरा आ सूं डर'र दैली'अ जावता ।

आंटकी जाळ रै हेडे डैरा डाळ्योडा रैवता । वनै तडाई । घू-दुपारै
 १ छोरा छडां मदरसै सूं आय'र जाळ माथे घाड़ धुवकड़ खेवता । मोनी
 २ गुच्छै ज्यूं सूम-बलूम जाळिया नै तोट-तोटर खावना अर खेजावता ।

बदे-बदे लोग आठ या आठ गीतों का गाना भी देता आठियों का
आठियों में उठते लोग का गाना भी देता ।

लोग तो मानते हैं । वे सगळी मिलाते आठियों का भी देता

आठिया का आठकी टांग ।

आठकी आठकी आठकी टांग ॥

आठियों का भी देता देता तो नमिसे करता, पाठ आठ के चुपचा
पेट कायता ।

आठ के नमिसे अकेल नमिसे । बरना के दिना में पाणी से हवा-होते
भरीजती । लोग छटा नमिसे के वारे घोषारियो माट देवता । कभी कपड़े
गोले के नमिसे नै बट जावता । पाणी में छपल-छपल की अवाज हुक्ती
जद आठियों का भी देता भीक नमिसे के घाट माथे आठ के घाट के जोर से
सिध भरजना करता । लोग एक मुठ्या में पाठ हुक्ता । आठियों का
अणजाण वालकां का रखवाला हा ।

कामकाज आं के घणी मैनत रो हो । भोर का वेगा-वेगा उठते
आपरे वाड़े जावता । गाया नै घाम नावता, ग्यार देवता, पछे दूध दूवता ।
गाय के ऊम मायसू भाड़ भड़काय के दूध कोनी निकालता बछड़े के दूध भी
आघा सेर खण छोड़ता ईज दूध बंध्यां आला के टेमोटेम पूगावता ।
मईने रो मईने आपरो सगळी हिसाव गाइकां से कर लेवता इयां पेट
पूरती करता ।

आठ साहें आठ के अड़े-गड़े पाणी रो पूणियो घड़ो लैय के मोल रो
नाखता । अके घड़े रो अके आनो । नित-हमेस का तीन रुपिया टांट में
घालर घरे बड़ता । कदै निकमा कोनी रेवता ।

आठिये कावे के मूडे लाग्योडे माणकिये अके दिन आं नै पूछियो-
“आठिया कावा, थारे आगे-लारे कोई खावणियो कोनी, थे वयूं पैसा भेला
करो ।”

आटिये वाबे उबलो दिपो- 'अरे भाई माणकू धू हातताईं टायर है
 दू बारें कमभै । मिनग नै बट्टे टायो बंठपो ई नई । मिनग नै मजूरी
 करे पर मे यइलो बईजे । केरू मुगरी नोद भावे । माणकियो हस'र टुर
 रावतो ।

इक बजावन मे आटियो वाबो बडा हुमियार । गठी,गुवाट में आरे
 बग-वर डफ बजावणियो कोनी मिळतो । होठी रे दिना मे आते दिन उफ
 अरे हाथ मे रैवतो । गागे पेमियो नाई बमरी बजावणियो । बमगे री धुन
 में उद 'बाजटियो' गीत सर हुवतो, वीं बगन बंढतो बटाऊ पग धाम
 रैवतो ।

अेक गीत पूरो हुवण मे एक घटा नैरी लागतो । बीच-बीच मे पेमिये
 गे बमगे अ'र आटिये वाबे री डफ री नेज मुकावलो हुवतो । मुणणिया
 मिनता री भीड़ जुट जावनी ।

ठडी रात रा जद बदे पेमियो अर आटियो वाबो भेळा हुय जावता,
 गी बंळा 'पणिहारी' री गीत बमुरी मादे गवावता अ'र सुद डफ बजावता ।
 आटिये वाबे री राग भी कवा राग ही । बडा भीठे मळे रा भीठे मुरा रा
 रै घणी हा ।

आटियो वाबो बदे-बदे मजूरी करण मारु गेता मे भी जावता ।
 गठी बळध तो आ रा घरा-घर हा । बळध अिमा दीवता जाणे वारें डीला
 गवे माथी तिसळें । सवावण विलावण मे जानवरा नै बोत मोरा रावता ।
 कारण नजीक रै खेता मे आ रा बळध वीन जल्दी पूगावता । जिके दिन
 गरी बळघा री जोड खडत हुयो वी दिन मू आ गाडी बळध लगोट करुपा ।

म्हे अेक दिन आनै पूछियो- 'आटिया वाबा, धै गरमी रै दिना मे
 गठी-बळध लायर पाणी रा घडा क्यूं नीं टाळो ?' केसर देसर री
 एवो तो घणो दूर है ? आ बळती राय, ओ पाणी डोवणो ।

आटिये वाबे उबलो दिपो- वेटा, गाठी बळध हा जिका दिना मे
 पशाईं रावता । हूं अिमा-बिसा बळघा री जोडी कोनी राखू ?

कौन उचलें देवर अपमण मा हुयग्या में देव्यों क आ काई बात है ?
आटियो बाबो रिगाला हुयग्या काई ।

पण सोड़ी नाळ पई था आपई संयो देग घेटा, म्हारा बळघ पाल्योडा
पोधयोडा माय नू अंक नै किणो नाग नू मार दियो । मरने अंक मिट
गोंक लाग्यो । आ म्हारे करमा री वान हे जदे तो कीईजे क

“करम शीण भेत्तो करे. बळघ मरे के काळ पई ।”

आटियो बाबो भोळी हिरदे रा हा । भगवान माथे विश्वास करता ।

नीज सिवारां माथे आटियो बाबो फीटा-फीट रवता । दई री जात
गफेद चोळो अर बोवी । माथे टोपी खादी आळो, कानां में खस अर गुलाब
रा फरूया लगायोडा । नू जे मे नूवां तोट घूमण नै जिकी गळी नू निकळता
वा गळी कई देर ताई खसवू देवती ।

अिमा सोन्वीन अर मन मीजी आदमी हा । सीयाळो आंन घातीक
रवतो । कओ न कओ वीमारी-सीमारी आयर ओकर आंन मांचे सईणी कर
देवती ।

कोई पांच सीयाळा गया हुसी आटिये वावे नै खूट्पा नै । जद कदै
आटकी जाळकी खानी निजर जावे आटिये वावेरी याद देखण आळा लोगां
नै आवै ई ।

गरीबदास जी

हिरदं रा भोळा-भाळा हा गरीबदासजी । सभाय सतजुगी लोगा री नरं । जिमो धां रो नाव विसा ईं घर सूं गरीब । ताजो कमावणो अर ताजो वावणो ईं वा री जिनगी मे लिह्योहो । परवार मे घणी लुगायी दोय । आगं-सारं कोधी कोनी ।

दिनूर्ग मिझ्या हखी सूखी रोटी मिळ जावती थी मे ईं दोनू सतोखी वण्या रैवता । किणी वात रो मोच-फिकर उणा नै कोनी हो । भाग पीवण मे मोख अर चरको मीटो वावणरो मोख कदै-कदै कोओ यजमान रै चेतणे सूं माग'र पुरो कर लैवता ।

नौकरी अ'र कामकाज आरं घरवार मे कोनी हो । बिरत-वाही रो पधो अखी । मरीर मे ठीक-ठाक, रग गऊ भरणी अ'र आख्यां साल चट्ट पीसूं भात । पॅरण नै मीनो सोक अगएव्यो अ'र धोनियो । पगा मे पाट्योही पगरखी । घर सूं निवळता जद जरदै रो रगशाई हवैळी माघं करना रैवता । चारं कोओ सैधो अण सैधो मिळ्यो धीनं जरदै रो मनवार करना ईज । गरीबदास जी मत मभाव रा हा ।

ना करी हायही-देयवी अर न निदा-जम्मुनि । आ मगळा सूं चारं कोम दूर रैवता । दिनूर्ग रा बिरत में पूमगा अ'र मिझ्या बिरत सूं मायोहे मामान री रोटी-वाटी बणाय'र छाव पीजन दोनूं घणी-नुगायी पूंणी वण-जावता ।

वी दिनां मे रीर में खोर्या बोपनी जगं हूवती । रोजीना थोरी-आरो रो ममवार लोगां मे गुणीजता । आज कयाणी रै थोरो अ'र वाज पनानं

ने सोचो हुयो । पण गरीबदास जी ने ई बात रो पढ़े ई ध्यान कोनी रैयो ।
 आपनी मरती मे मरत फलका रो मरे निर्वाचन देवता । 'फरि जिको भुगत'
 आपनी विजा ने मानता ।

अक दिन मिकर आनी रात रा आ रे घर मे च्यार चोर चोरो करण
 माम दृग्ग्या । पाम परोनी मे नीद मे सुत्ता मोठा मुटता लेवे । चिड़ी रो
 पायो ई सोचो जाये । निण दिन राम जाणै गळी रे गंडका सगळा ई भांग
 पोती हीक काई हुगयो, कोआ भू के नरे ।

चोरां ने सोको लागयो । वे सूनू ओमर चुकता । मोके रो फावदो
 चढाये जिको ई मिनत । चोरां आ रे घर मे घुस'र सगळा आळा-ताळा
 सभाळ्या । सोच्यो अवे नाल कडे मिलसी ? सुपो-सुपो खोजते घनी रात
 बीती । चोरां ने भूत तिस लागी । वां रावण-पीवण रो अक-अक टाव
 मोच्यो, पण अक दाणो भी रावण सार कोनी मिलयो । बाकी रा चोर तो
 आ देखने भागया क' अवक विना बात कडे पकडीज नी जावां । भूखां
 मरता, तिरता मरता जिका दोंपण आळा हा सै नाठग्या पण दया बाळो
 दयाळू हुवे ।

गरीबदास जी रो गरीबी देख'र अक चोर रो हिरदो पिघळग्यो ।
 विण सोची क' आं रे घर मे रावण-पीवण सार कडे कोनी. आं रो गुजारो
 क्रियां चलै । मन करणा नू कुरलावण लागियो । चोर रे चैरे आने गरीबी
 रो चितराम लंचग्यो । वो आपरी मुव-बुव विसार'र जोर २ सूनू कूकण
 लाग्यो । कूक्यो तो असो जोर रो कूकियो कै गळी गुवाड रा सै जागया ।
 पण गरीबदास जी अर आंरो लुगयो दोनू ई कोनी जागया । दोनू नीद रा
 खरटा भरै । आं रे चिपतै घर आळा पडोस्यां सूनू फाड'र हेलो मार-मार'र
 वां नै नीद सूनू जगाया । अ निस्फकरा सोवता ।

पैल-पोत गरीब दास जी रो आख खुली । वां सोच्यो ओ रोळी किण
 रे मकान मे हुवे । फेर जद हेठे उतर्या तो देख्यो क' कोआ मिनख आं रे
 ई घर मे रोवण लाग रैयो है । भोळापण रो हद हुवे । गरीबदास जी
 गजब रा भोळा ।

रोवनं भिनख नै वा पूछयो- तू कौन को छोरो है ? तोकुं पैट तो कोनी हुलै । बोल काई चावै है ?

चोर उधळो दियो- मारा'ज हू चोरी करण नै आपरै घरें आयो । म्हें देख्यो क' कईं न कईं रुपिया पद्ममा, मोनो चादी मिळसी पर थारें घर रो सगळो लूणो खपूणो सभाळियो । घणी रात बीतगी । कई कोनी मित्यो । भूव जोर री लागी । बरतण-भाडा ममाळ्या पण दो दाणा ई घान रा कोनी मित्या । मारा'ज मनं घणो दु ग हूयो । आंभ्या मे आसू कुळकाव्या । या रो जीवणो कोकर हूथै ?

गरीबदास जी बोल्या- अरे बावळां, म्हारो नाव ई गरीबदास है । थनं कुण केंयो क' हू अमीर हो । मागणो अर खावणो म्हारो काम, फेर नीद मज्जे री लेवणी । ना चिन्ता ना फिर । घन वाळा री नीद उई, पण मन वाळा रै मोज ।

बी चोर गरीबदास जी रो उयळो मुण्यो अर टुर'र बहर हुवण लाग्यो ।

इतरें मे गरीबदास जी बोल्या- अरे मुण भई, काई जळ वळ तो पी जा ।

चोर लाजाभरग्यो अ'र बोल्या- मा'राज, म्हारी भूख अ'र तिम दोनू अूंची चढगी । जद समार मे गरीबी भोग'र आदमी मुखी रै सकें अ'र मिल जितें मे मनोम धारें फेरु हू विण भे थास्तै चोरी करुं । आज सूं म्हारी आदत मुधार सूं चोरी री सौगथ । आ थंय'र आसू कुळकावतो चोर रवाने हुवग्यो ।

गरीबदास जी फेर हेटलो आडो टक'र पाछा हागळें चढग्या अर मुख री नीद लेवणी मरु करी ।

भोर मे गळी-शुवाड मे लोणा नै घान मानूम पड़ी जद सगळो भू'ई आगळी घातली ।

इसा समय आळा, भोला-भाट्टा हा गरीबदास जी । न टर्क री लैण न टर्क री देण । पण मस्तो मे कमी कोनी ही । फवकड ज्युं जीवण बीतावण आटा हा ।

हऊफानाथ

नाथ जो अँरगो अष्टपदो सागती, पण गुणां रा संभौर अँर वात्तेई
 वडगा रा गोभी अँर पंचायत रा फुडु पंच । मगळीं वातां आप ह्यां
 ह्येव मकोंका । ईं परजांतार में जिमी आरें तावै आयी है विसी कि
 रे ईं कोमी । भा रे जीवण में अँक ईं वात रे विसैसता है । बोलणो मिसरं
 निरवतो, काइसी धान रा धान, पण अँक मज रे हाथ कोनी आवै । क
 पणा वड्ड मभाव रा है ।

आप नू नाक रा जायँ, पण पत्तो कोनी चालण दे । रूपरंग रा फूटरा
 फर्रा, कोळी पारो रो कुरतो परण नै, धोळी धोळी अँर धोळी टोपी । वा
 भी जद जनै तो तगावै नीं तो नीं सरी । चप्पल सस्ती अँर मोकळा वरस
 धान सके, अँसी परै । आरें घर में रँवण रो डंग निरवाळो । लंगोट मारण
 नै अर अंगोछो परण नै । वाकी आली रात उघाड़ा ईं नींद लैसी । दिनूनी
 न्हाय-धोयँर फोटा-फोट । अपनै आपनै वोट बड़ा नेता समभै ।

वात तारी भी है । अणजाण लोग भी आनै कोई वोट वड़े नेता सूँ
 कम कोनी समभै । जितै ताईं अँ अँक ईं सवद आपरै मूँडै सूँ नीं निकालै,
 विण बलात ताईं लोग आनै सरधा अँर आदर भाव सूँ परखसी । पण आं
 रे व्रिस्टी गोध व्रिस्टी रँसी ।

आं रो काम-काज लोगां रा कान कतरणा । माछली सूँ लेयँर
 मगरमच्छ निगळ जावै तो कोनी वासण दे । आंरो ध्येय समभो चावै नारो
 समभो अँक ही है "जै मतळव रे" ।

वीन मरो चावै वीनणी, जोसी रो टको त्यार आळी वात आं नै मन

रानी लाने । अंजन दुकान पर मूं कीनी निकळें । मागे च्यार भायला
 बरं च्यार पांच पट्टा । सै गिळ-सायक रो पाठ पडिपोडा । आं सगळां
 रो डिग्री मे छानिछर रेके । पोटी परे जठे कभी न कभी उठावें ईज । जठे
 ह्जकानाय जी रो पदाव पडे बठे कभी न कभी कापदो अकत हुवे ईज ।
 ई बरा बात पोम अंर तूमचा-तोस है ।

राजनीति मे खुद नै धुरंधर पडित सामभै । चुणाव रे दिना मे चुणाव
 रे कताडे मे "जे बजरम बली रो" जगै "जे मतळव रो" कौय'र खुद जाती ।
 नीरे मूं नीचो अर अंजे मूं अंजे काम काज करण ताई त्यार रेसी ।

बडा-बडा नेतावां नै अंकर इमे पजे फसाती क' भट मूं निकळ'र वै
 नदे भाग मके । ज्युं पचपोडो आम ताय'र गुठली फंकीजे विण तरै अं
 विण नेतावां रे भाटो लगाव'र सफाई करदे । आपरा अंर पराया आ रे
 समान है । पैसा सूटावणिये रा अं सीरु है ।

ह्जकानाय जी नै ह्जका मारण रो सोख । इमे मे भायना चुणाव
 तरे वा काम भोळार्वे तो भी पैसा लागे । अविस्थात जद कदे चुणाव रे
 पाछे मैवरां मे परीजतो, अं पट्टा गटकावण आळो काम जारी राखता ।
 ईं मे भायलो-भपैलो कोनी गिणीजे ।

मू'वा-मू'वा ऊगता छोरा नै अं पैलीं आपरे मण्डल मे ले'गी । वां रो
 परससा रा पुळ धरती मूं आभे ताई बाघ देसी । पण जद कदे वा नै छोड
 छिटकाय'र अळगा हुमी, विण बखत वा छोरा नै इणगीं रा राखे न कोभी
 विणगी रा ।

ह्जकानाय जी बडा चाल-बाज । समाज सेवा रो तो आ रो नेम,
 थोट मे घर-सेवा सगळां मूं पैली । जठे खायकी दोस्तसी बठे पैता पूगसी ।
 दो जणां नै लडाय'र बीच मे पचायत खुद करती ।

अंक दफे खीवले जाट रो मुगापी रा गै'णा चोरीजग्या । विण पुलिस
 मे रपोट करो । पुलिस खीवले रे घर धैरा घाले । भाग-मुभागे ह्जकानाय
 जी बटीने मूं निसर'रया हा । पुलिस नै देखी जद आप भी बठे पूगया ।
 खीवले नै सगळी बात आं पूछी । पूछ-ताछ'र आप खुद विण नै वा कीवी

क' भारी पुनितम नू पंचो इहाय'र मेलो दिगम देनु' । आपरो भेट पूजा तो-
करनी । पडमा सामयता अर रोचन आळो रोनी सीयनी जाड ।

परम-करम रे काम में अ' नगळा नू आग' । मंगल रे वृणै नू लेय'र
नीरवां ताई' आप युमला भगनी दिगानी । जद नई मठ में नू'वो मडाधीस-
नी'र में कट्टई रामायण-परायण या कीरनन करवानी हऊफानाय वठै त्यार ।
वा में आ मालम पड जागी क' नारा'ज अटै गरचो वणो करसो । मतळव
अंक करेन आळो वात हे क'-

जठै मिर्म नाटू-नूरमो वठै नंदू त्यार ।

अर जठै वार्ज नट्ट कड़ा-कड़ वठै नंदू पार ॥

मीठै धान मारै त्यार अर नट्टाई भगई नू पार । वरम रे काम-
काज में भी मिट्टो नेकणी रे आं रे नीवत रईईज ।

मळै-डयोळै, हीळी-दिमाळी, उच्छव-परव माथे हऊफानाय हाजर राहाजर
आंरी हूजां नै वतळावण रो तरीको वडो चोखो आवै । चावै अणजाण हुवो
चावै जाण-पंचाण आळो । आप चलाय'र इयां बोल्सी- कौवो पंडित,
तवीयत मजे में हे, काम-काज चोखो चाले, म्हारै लायक सेवा हुवै तो
भोळायै । लाज-सरम रे जरूरत कोनी । आ कौय'र आपरै पट्टां नानी
सामो जो'सी अर कौ'सी- 'ओ छोरो वडो सै'णो-समभदार है । युवको
घातण जोग । आप नू वडा रो हमेसा हुकम राखै, आपां रे वात कदै
कोनी टाळै ।

नू'वो छोरो आं रे परसंसा आळी वात नू लजखाणो पड जासी,
अर गरदन नीची कर लैसी पण आं नै जाणन आळा तो आं रे अंक-अंक
रग-रग नै जाण लै'सी ।

जगै-जमीत दावण में हऊफा मारणा, खावण-पीवण में हऊफा मारणा
वास्त्यां में आगै वढ-वढ'र वास्त्यां अर रुपिया विलरते देख'र रुपियां खांनी
हऊफा मारणा अ'र सिट्टो सैकण रे कारण ईज लोग आं नै हऊफानाय
कौवै ।

५. काग काग मीद भी उदु वई काग काग वर वीतो भादरी भागदा
नीर म्दुद मी । का गो काग म्दुद म्दुद म्दुद है वल उद या रै वरगाव
रि वीर-काग उ म्दुद वी'को वीर का वी काग काग उदु र म्दुद-काग,
। उदुदो वी वरगो ।

मारजा

मनभुग नैपई देवता या नई देवता, पण मनवादी लोगां रो जमानो अरम हो । जिरो मे ई पञ्चम मे या लोगां नै नंत माधुवां रो गिणत मे यातीने । पोसवाळ अर मदरसा टावरां नै पदायण रा चोगा घोर कैईजता । पदायण प्राळा मारजा मुग्गी जिता रो नवर परमेवर सूं दूजो होवै । सै माटाव थाप-आप रै टावरा मे आ भावना ठंम-ठूंन'र भर देवता । पोसवाळां मे कुमती घटा, गुणा, जोड़-वाही रै मार्ग-नाम दुनियादारी रो ग्यान भी टावरा नै देवता । राजावा रै राज मे अूंची-अूंची शिक्षा रा मदरसा कोनी भिगना, जगं बजार-चो'टे रै काम-काज मीत्वावण सारु मारजारी पोसवाळां रो गुल्बोड़ी ही । सेठ साहूकारां रो दुकानां माथे मुनीम रो जगं अलग-अलग मारजावां रा चैला काप-काज करता ।

आ मारजावां मे नामी-नामी घणाई हुया । लिखमो मारजा, भत्तीयो मारजा, लाला मारजा, अर खोड़ियो मारजा, पण फकीरो मारजा आपरी पिरकत रा अलग ई हा । सभाव रा मस्त, हंसाळु अर दयाळु कदै टावरां नै जोर सूं कोनी मारता । बिया लिखमा मारजा रो भणावणो अ'र मारणो दोनू ई परसिघ हा । फकीरा मारजा रो भणावणो अर लाड-कोड रा गुण आज ताईं मोकळां रै मूंडे सूं सुणीजै । मारजा गंगा री तरें निरमळ सभाव रा हा । हिरदै रा कंवळ सूं ई कोमळ । ईं कारणे आं री पोसवाळ छोरां सूं भरी रैवती ।

मारजा मॅनती अर कामती हा । कदै खाली निठल्ला कोनी वैठता । कोओ न कोओ काम चालू रैवतो । पोसवाळ तीन वेळा चालती । भोर सूं

प्यारू बजी ताई । दुपारें रा चारें मूं च्यार बजी ताईं अ'र फेरुं सिइया परो पाछें । बीं बेला मालणी अर पहाड़ा पढीजता । अँकै-अँक मूं लैय'र फेरुं मोरणी ताईं छोरा मालणी धाँचता । जद धानें छुट्टी हुय आवती । छोरा मारजा रै चरणा रै हाथ लगाय'र फेरुं घरै जावता । मारजा रोटी ग्याय'र नौं रा मवडका नैचता ,

परमेसर री भगनी अ'र सरधा मारजा में पक्की ही । आं मस्कारा मूं बां रा चेला-चांटी पोछे कोनी रैवता । मगळवार अर छनिवार नै हइमान जी री पूजा मदरसै में हुवती । पइगा छोरा कनै मगाय'र कईं आप आळें त्रेव मूं भेळ'र धूम-धाम मूं पूजन करवाय'र छोरा नै परसाद बाटता । ईं मूं छोरा मारजा री पोसवाळ में हरभ चाव मूं आवता ।

गुरु पूरणिमा मापी छोरां रा वाप मारजा मूं मिलण-भेटण आवता जद रुपियो नारेळ सरधा साहं आ रै चरण कंवळा में रावता । टाबरा रै मन में ईं बात मूं मारजा रै कानी घणो हैन अ'र सरधा री भावना पैश हुवती । मारजा पूजन जोग हा ।

आ री पोसवाळ री खोलण आळी टैम सरसुती री अस्तुति आराधना हमेंस हुवती । पोसवाळ में कदै सी छोरा अर कदै दो सी छोरा भरती रैवता । कैया मूं दो रुपिया मइनो अर कै मुपल । मारजा रै दो मौ ताईं मो रै अई-गईं मईनें रा रुपिया हुय जावता । अँक-अँक छोरे रो प्यान मारजा राखता । हरैक नै रोत्रीना रो काम काज मोकळो करावता । जिको छोरो काम-काज कर'र कोनी लावतो, विण छोरे नै आपरी गोरी में सेय'र पैली लाइ-कोइ मूं घतलापै । फेरुं छोरो जद ममयरी मूं हंम'ण पाग जावतो विण समै मारजा छोरे नै पूछे-बपूं चेदुरी, थोव घारी समभ में पहाड़ा(पाडा)कोनी आवै । जे नीं आवै तो फेरुं ममयरा मूं । थूं तो फुटरो-फरो अरंसाडेसर हू । आ कैय'र मारजा आपरै टाबरां रो मूंइो खुमना । जे कोपी छोरो बदा'म नईं मुळवतो जद अँ आप आळीं दाडी रा बेस छोरे रै मूंईं मूं खुभावता । इवै कारण रिगाणो छोरो ईं हंमन-मुळरण पाग जावतो । जद मारजा विण में फेरुं पाड़ा, ओइ, गुला, बाबी, धाग

भोगवता । या रो कौणो हो क' मार नूँ टावर विणई अर लाउ प्यार नूँ भणे अ'र गौरी ।

यावक मन ग भोजी हुये । या रो सम्प भगवान रो महप हुवे ।
इहो माइय मारजा रे आगे टावर-टीगरा नै मारतो लावतो, मारजा विण
नै कटकारता । आ कौवना क' "तूँ इये नै कोनी भणा सकै" मारणे नूँ
टावर चीठ वण जाये । मार मे मार कोनी । फेर विण रे छोरे नै आपरे
गने लाउ नूँ र्थटाय नैयता । टावरा रे वास्ते मारजा रे हिरदै मे
अणभाग दया ।

पोसवाळ रो छुट्टी करणे नूँ पैनी छोरा राने मारजा कईं न कईं
गीत गवावताईज । रोजीना रा उणां रे मूँटे नूँ विण गीतां नै बोलावता ।
गीत इयां नीने लिने मुजब हे—

काळ चिड़ी अँ काळ चिड़ी
सी-सी घोड़ा ले पड़ी
अँक घोड़ो आरंपार
ज्यां में बैठा मियां कलां
काला है फिसन जी
गोरा है मुकन जी
परमेसर रै पांय लागूँ
हाथ जोड़ विद्या मागूँ

ई गीत रो समाप्त करण रो लारती कड़ी है "गुरुजी पकड़ी चोटी
चोटी करे चम-चम, विद्या आवे घम-घम ।" हरेक छोरे नै अँ गीत चोखा
याद हुयग्या । गीतां रो मोठा'स अर परमेसर नूँ भोळा बालकां रो विद्या
रे वास्ते विणती कितरी सोवणी अर मन मोवणी लागती ।

चोखै २ परव माथै अर त्यूआरां माथै पोसवाळ रो वेगी छुट्टी कर
देवता । मारजां छोरां रो रग-रग रा जाणणहार मेलै-डवोळे खुद भी
जावता अर छोरां नै जावण रो प्रेरणा देवता ।

मारजा आपरी पोसवाळ रै समै रै पछै कई-कई अंगरेजी भणन आळां

छोरा नै पटावण जावना । गणित भणायना । व्याज रा मुवाळ. अंक-अंक
 निरम ग मुवाळ तो मारजा रै हाथ रो बात । समै दूरी अर समै काम रा
 मुवान भी छोरां नै पटावना । मारजा घणा हुमियार ।

बुझारं मे मारजा रै दो सोय पड्य्या । वै दुर्व्यसण हा । नान तावडें
 भरणी चार पीवणी अर मोटोडा भुजिया खावणा । मारजा रा दंत सै
 विरग्या हा पण भुजिया मोटोडा कुंमता रैवना । गाला मारुं भुरिया
 पडियोडी, मल-मल रो भीणो चोळो अ'र पनली घोती घारयोडा, हाथ मे
 लावी मक्की जियोडा मारजा मिड्या दिनूगै धूमता रैवता । रग काळो सो,
 गळे में वावा मिणिया रो माळा लनाट मारुं राख रो टीकी म्हायोडी
 नित हमेमा रगता । टावरां रो मन राजी, जद मारजा रो मन राजी । अं
 टावरा माय लूम-वन्नुम हुयोडा, टावरा नै भगवान रो मरुप मानण आळा
 अंक दिन भगवान रै सिरी चरणा में पूंगया, पण आप आळी छाप वूडा-
 टेरा अर वाळक-जुवाना रै हिरदै मे छोड्य्या । नाव फकीरो मारजा, पण
 पमात्र फक्कड आलो ई हो । मस्त फक्कड रो तरै मूनी पोमवाळ छोड'र
 रमनाराम हुयया ।

चौपनिया

गमगारा अर गुलछर्रा छोड़न आछा हरिक मर में मिल । वड़ै-वड़ै राजदरबारां रै माय गुलछर्रा छोड़नियांरी बीत पूछ । वात-वात में हंसावणो-मुळकाणो, सभाव मं दूजा लोगांन राजी रातणा हंती-रोल कोनी हो सक । जिआंरो दिल दरियाव होय अर आगती-लारती वातां माथै सीचै-विचारै अर हंससा हसता रैवे विण मिनतांरो जीवन घरती माथै सफल होव । जठै-कठैई सरणाटो छायोड़ो रैवे वठै गुलछर्रा छोड़नियां आप आळो काम थालू राखै । यां रो जुवान रो लटाई (चरती) खुली चालै । वोळण रो कन्नो आर्ग सूं आर्ग वधरतो रैवे । गोच रावण रो कठैई काम कोनी । वात्यां रा फर्रा जद अं मारणनै वंटे विण सम रात सूं भोर उगायदेवै । आप-आपरी सुद-बुध भी कोनी रैवे । सम घड़ीक सो बीत जावै ।

गुलछर्रा छोड़ण में गोकुल सा परसिध हा । आं रा चौपनिया जद खुलता तो लोग हंस-हंसर लोट-पोट हुय जांवता । आप आळै काम धंवे सूं निपट'र जद कदै पाटै माथै आय'र बैठता वां बखत लोगांरो, टावरांरो अर नवयुवकां रो भुंड आंनै घेर लेवतो । आंरो लच्छेदार वात्यां अर वोळणरी आदत नै सगळै सरावता । गोकुळ सा परसिध वातेरी हा । लंबी चौड़ी वात जद सरू करता तो संवत् मिति भी कोनी देवता । पण वात असी काळजै री कोर सूं फंकता क सुणन आळै री कानांरी खिड़क्या खुल जावती । वड़ा वात-पोस अर संतोष राखनिया पुरुष हा ।

गोकुळ सा मैनती अर कामैती । घणी-फुरसत आंनै कोनी ही । निकम्मा कदै कोनी बैठता । रसोई वणावणमें आं रो रिकाडं हो । नामी

सोईना । तुमचो दगावपरो मीको भी हाथ न् बंद कोनी छोडता ।

बीक रा लोग गोकुळ मा रा चीपनिया तुणन नै त्यार वंटा रंबता गरं बोतप रं समें में बीक मे टाग कोभी कोनी अडावतो । वा रं मूटं सू कतारी नडो लाग जावतो । अंक गुळछरें रं मार्थं दूजो गुळछरें । धं वडा धरंसाव हा । परदेश जावता तो रसोई वास्तैई । रसोई आ रं मनरी मरजो गरं होवतो । बंद चलाव'र कंदेई घरं कोनी जावता । गोकुळसा खरा अर मचा जादमी हा ।

ईनर भगति अर नित-नेम में कदं कोनी चूकता । चावै बीकानेर में हुंनो चावै बळकत्तं-मुंबई । धारो भगवत भजन चालू रंबतो । आं रो ओ विस्वाम होई परमात्मा देवै जद छप्पर फाट'र देवै । सच्चे मन सू बी रो पुमरण करण घाळा हुवणा चाईजे ।

मीयाळै री वात । गोकुळसा बीक मे धुणै मार्थं वंटा हा । रातरी कवीव धाट-नी रं अडं-मटै ही । वा धाप आळा चीपनिया उयळना सरू करिया । धारी वात रं माय वात जोडता अंक जणै कंयो—गोकुळसा । धा नै रसोई तो बोत चोखी करणी आवं, पण धा वनावो कं ५०० आदम्या रो भाखर कितरी वेळा मे त्यार कर सको ।

गोकुळसा उधळो दिवो - अंक घटै रं माय-माय पांच मी आदम्यारी रसोई वणै ।

आग आपरी वाग रा गुळछरें सरू करियाईज । वां कंयो—अंक वरुं बळकत्तं री वात । मोकळा वरम वीनम्या । जद हूं जुवान हो । बळकत्तं री गगा मे ग्हावणनै रोजीनै रा जावतो । नित-हमेस करीव २ दो-तीन घटै गगा रं इमं पार सूं दिव्ये पार ताईं तैरतो । अंक वणियाणी ही । त्रिकं रं कोवी रसोईयो कोनी डूक्यो । दिण नै दो-तीन घटै छेई पांच मी आदमियानै भोजन करावणो हो । दिण सगलानै म्पूतों भेजाय दिवो । पण वखत हुवण लागी । रसोई रा राड-खोज ई कोनी सेटाणी हुक्की-ववरी हुयगी । दिण मनै याद करियो । बी म्हारें घरं सनेसो भेजावो । पण सोगा म्हारी टिकाणो गगा रं किनारें मिळण रो वतायो । सेटाणी जाप तुद

देवकी माथे पारंगत पण रं पार माथे आयो । या अटोने-उटोने भाला भायें । पण गोकुळसा तो गंगा रं गरी ईये' पार करे विये पार । अवकें जद गी' पार मू' पाथो आयो क' सेठाणी घोळी घोळी अर चमकते चदरें में उभो-उभो वाक येयो ही । म्हने वीम पट्यो क' आ म्हने ई अटीकें । बीजो पळे कुण हूये त्रिके नै विपियानी प्रदीकें । जाण-पंचाण सेठाणी नू' पुराणी ही । या म्हारे रसोई वणवण री फुरतो नै जागणी । वंटो रा काम भिन्टां में अ'र भिन्टां रो काम नैहिटा में हूये । सेठाणी नै देखने ई हूं किनारें माथे आयो । सेठाणी नै म्हे पुछ्सां— कैयो सेठाणी, ग्राज गंगा रं तट न्हावण नै आसा काई ?

सेठाणी घोळी— नईं गोकुळसा थारी ग्वातर अठे आवणो पडियो ।

' हुकम करे, म्हारे नायक काई काम हे—' गोकुळसा पूछ्यो ।

प्रवार दो घटे छँडे पांच सी आदम्यां रो जीमण त्यार करणो हे । खुनो तो सगलां नै दिगयो पण रसोइयो कोनी लाड्यो । अवं ये खुद काई करे हो । कपडा पेरंर चालो म्हारे मार्ग— आ वात सेठाणी कैयी ।

गोकुळसा उयळायो—सेठाणी जी आप पघारो, हूं अवा'र आयो । दो तीन मगरमच्छां मू' कुस्ती लडणी वाकी हे । एक दो मू' तो लड लियो हे ।

सेठाणी गोकुळसा री वात सुण'र मू'हें में आंगळो राखली । फेरुं घर खानी खाना हुयी ।

गोकुळसा सिध्या घाल दी । पण सेठाणी रं रसोई करण नै कोनी पूरया । सेठाणी फेरुं सनेसा माथे सनेसा भेजावें । आखर सेठाणी रं हिरदें में उधळ-पुथळ मचगी । जीमण आळा आदमी अक घंटे छँडे आवण आळा हा । सेठाणी पाछी टैवसी लेय'र गंगा रं तट माथे आयी । अवकें गोकुळ सा न्हाय थोय'र विण नै त्यार मिल्या ।

सेठाणी— गोकुळ सा, वेगा-वेगा हालो । थां गत सो म्हें गत । म्हारी लाज थां रं चरणां में । पांच सी आदमियां रो जीमण नईं वण्यो तो सगळें कळकर्त्तें में म्हारो काळी मू'डो हुय जासी । वेगा-वेगा हालो अ'र रसोई

बनायो।

अबकै गोबुल्ल सा बोल्या—क्यू फिकर करे सेठानी देख तो मरी गोबुल्ल सा रा टाठ। भवा'र रसोई बर्ण। मिनट मीक लागै। चालो घर मैनी माथै।

बाग रै बीच मे घूणी माथै वैंठे अंक छोरें पूछ्यो क्यू गोबुल्ल मा, कैं घंटा मे पांच सौ आदम्या री रसोई सानै बणगी ?

गोबुल्ल सा बात नै काट'र बोल्या—अरे वाबुल्ला मुण श्रद सेठानी रैं घने पूयो तो रसोई री वास्ते भट्टी खोदायोडी कोनो ही। म्हे फटा-फट बोछा उवा चटाव'र भट्टी बाधी। सेठानी नै कैंयो कैं २ दो घासलेट तैल रा पीपा मगाय लै।

अंक जणो फेर बीच मे बोन्यो—गोबुल्ल मा रसोई मे घाम संट रै पीपा री बाईं जरूरत पडी ?

गोबुल्लसा उच्यो दिपो—धी मिड्या बररर बरमणा मर होदगी। रीनो नील रायगयो। जई घासलेट रा पीपा मगावणा पट्ट्या।

अई दो भट्टयां खुदायो दोनू माथै बढावा चढवायो। अंक भट्टी मे ३ मू पीपो अूषवायो क' मोनी पाक त्पार। दूबो भट्टी मे फेर हट बरगो गो ऊपवायो। अई पूड्या-नाग अ'र पकीड्यां त्पार हुवगी।

म्हे सेठानी नै कैंयो—तै सेठानी आ मोनीपाक त्पार। पूड्यो गर। ओ अचार अ'र पकीटी त्पार।" सेठानी देखो "क गोबुल्ल मा परो रसोईयो। वा गोबुल्ल सा मवाग है का नै। रंग है घारी कुरतो। अंक घट्टे मे रसोई त्पार बर'र भी ग्हारी मात्र रायो। मोनिये तरतो पोली राग दीयो।

गोबुल्ल मा री ई बात नै गुण'र नै लोग हगलो तम बर देवना। बापना "क ओ बीपनिदां री पैल्लो पातो ई खुलो है। आररो वाग्ना त इज बरणा। बदनामो घ'र मबानी आर ई आर नै लैवना।

सेठानी आली बाग उद पुरी होय जावनी उद दुगी बाग मुण्ण मापार नेत बरगना रागना। लोग लैवना लोकना राई लई कनिदां री बढावोला

गोत्र पड़िया है । पैर चला तो । गोकुल सा री भोगिनिये रो हूजो पानो
गुल'र काशीदयो मग शीयो ।

गोकुलसा केवना क' कलापे राजा रो राज तो आता री रुपियां माथे ई
पनयो । राजा नरो पनो मानयो । हू जद राजा सू' ना राणी जी ताहिवा
सू' मिलण भेटण कोनी जावतो जद थै आपारि हूककारि नानि बुलावण रो
ननेयो भेजना । राजा नै रुपिया रो जरूरत पड़ती जद हू आपारी अडोड़ी
भगारी री मांग सू' रुपियां निजान'र पूगावतो ।

“गोकुलसा रुपिया उथे पोसाक मे देवण नै जावता काई ?” आ
कोयी नजी'क वीट्यो मिनग दानि पूछ लैवता । आगे मुण'ण खातर से'
त्यार रैवता । वारै गुलछर' अर फर' नै जाणतै-बूभतै हुवे भी आणंद
लैवता ।

गोकुलसा उथळो रैवता—आ पोसाक थोई ई हुवे । राजा सू'
मिनण जात'र घोड़ी माथे वीठ'र राजाशाही पोसा'क पैर'र माथे ऊपर
पैचो केसरिया, कमर में दुपट्टी रो लपेटो लगाय'र हाथ में रुपियांरी थैली
नुकाय'र जावतो ।

आंधी रात री समै जद से नींद में सोवै विण बखत हूँ म्हारी पवन
वेग घोड़ी माथे खटक-खटक, खटक-खटक करतो जाय'र खट्टू सू' राजा रै
मै'ल रै आगे ऊभतो । घोड़ी री अवाज राजाजी लख्योड़ा हा । वै राज
मै'ल में पीढ्योड़ा भी म्हारी घोड़ी री आवाज लख'र वा रै आवता ।
हूँ हाथ जोड़'र कैवतो—खम्मा, अन्नदाता, कोंकर याद फरमायो ।

अन्नदाता बोलता— गोकुलसा दस लाख रुपियांरी जरूरत है । थारै
विना म्हानै कुण देसी ? आ रजवाड़े री लाज अवकै गोकुल सा रै हाथ
है ।

गोकुल सा उथळो देवता—घणो हुकम अन्नदाता । अ रुपिया
सेवा में हाजर है । घोड़ी माथे लाद्योड़ी थैल्यां सू' अन्नदाता रै आगे
ढिगा रा ढिगा लगाय'र कैयो और चाईजे तो हुकम करो ।

अन्नदाता-बोल्या—गोकुल सा ! थारै परताण मं तो जीव' नं ।

जिनके हार्न रविषा की मदद पारि निवा अर कुण दैव गोकुलमा-
 रण्यो, हुकम अन्नदाना आ मगळी आपरी ई माया है। म्हारो तन
 न अर घन मगळो आपरी सेवा मे लागमी। आप चावो जई परान कर
 ना।”

“अन्नदाना रो राणी सा बडा भला अर हिताळु हा—आ गोकुल सा
 नायो। राणी सा म्हारी परममा रा अन्नदाना रे आगे नित हमेम पुळ
 नां-अं वातां कैवता-कैवता छोरा यानो निजर घुमाय'र देखता'क छोरा
 निंरे माथे मळ तो कोनी पडै।

हार्न मे गोकुल सा रो पक्को भायलो आयग्यो। बिण कैयो कै
 गोकुल सा पतंग नील मे लडरयी है कै नई। बिण पूछ्यो-गोकुल सा
 केर वात तो वता। आवातीव माथे या भी कदै कन्ना (पतंग) उढाया
 ग। फेर क्या, गोकुल सा न आपरी वात कैवण रो मोको मिळ्यो। आन
 निशारो माथे हाथ फेर'र गोकुल सा सारली याता याद करी। भाप हाडो
 शोशो मळ्यो (गुलछरो) न्हायियो।

गोकुलमा कैयो:- अरे भई। वी दिन हा। जवानो रो जोग अर
 जोग-शानू शामिल हा। हूं आवा तीज रे दिन हमेसारी तरें भोर मे उडर
 पून्य जायरयो हो। म्हें देखी 'क ओ कन्ना अपा नै मूटणी घाईने। ह
 मोटी पाणी रो भरपोडो हो जके नै शोळ'र दडबड-दडबड बन्ने रे पारें
 शोडियो। कन्ना बठई अटबग्यो। योडी देर मे हू देणू क बन्नी होडे-होडे
 तेडे उतर रयो है। म्हारो जोग टरो बरफ गू' हुयग्यो। पण आगीन
 शरणी छोडियो कोनी। आगे जाय'र देणू तो मायम हयो 'क दगाडी
 मूर रो दान मे बन्नी अटबग्यो हो। मूअर आप धाई पडे मूर पणो
 बनारयो हो। म्हारा तो गिरें पूटण लागया जद म्हें ओ शिन्व देख्यो।

गोकुलमा रो ओ बीमयो लण्यो (गुलछरो) मुय'र मगळ विण-
 निषाय'र हमण लागया, पण कैप'ई बाने आ बाण मो जण्यो 'क मूर
 ई कदै कन्ना मूटे। आ जे बनावण रो बीमोम करीने तो मगळी दुह-मोडर
 ह्य आके। घात रो मजो तो दुबारी गागे ई आई।

बूटां नागि बूटां अ'र बुवानां नागि बुवान इसा हा गोकुळसा । वी जद कर्द चीक या गुवाए रै पाटे माथै मूंई उतारियोई टावर न देखता तो फोरट आपआळी वात रो करामात दिगावता ।

अंक दिन अंक टावर पाटे माथै अंकलो वंठो हा । हीलें सीक गोकुळसा वीं रै सने पूगिया अ'र कैयो-क्यूं भायला, आज काई सोच करै ? म्हानिं वताव तो सरी, फेर वात नै घुमाय'र कैयो — “अच्छा, हूं समझयो । भूं वीनणी रो सोच करै है । उर मत ! हूं थारा व्या'व करवा दे सूं । वीनणी रै कपटो लत्तो अर गैणा-गंठा सगळा आपां मेळसा । देख, आपां रै घर में बोत जंडो लळ भंवरो है । वीं रै मांयं अँ चम-चमाती संदूक्यां कपडां सूं तिडक रयो है । गैणा-गंठा सोनेरा, खरा मोतियां रो लड़, हीरां रो वींट्यां चांदी रो रमभोळ, चमक कळी, सोनेरी, मोतियांरो माळा सांकळ्यां, वंगड्यां अर जड़ाऊ गैणा सगळा पड़िया है । थारी वीनणी नै जिक्का-२ चोखा लागसी विसां सै राखमेळसा ।” इतरी वातां चुणतै तो वो टावर वारी गुलछरि आळी वात माथै हंस-हंस'र लोट-पोट हुय जावतो । लजखाणो ई न्यारो हुवतो ।

वात-वात माथै हंसावणरो जाणै ठेको लियोडो हो-अिसा हा गोकुळ सा । लंबा सीक, घुघराळी केशां आळा, मैदियै गऊरै रंग सिरखा शरीर वाळा घोती-चोळो धारणिया, दाढी मूंछ्यां थोड़ी-थोड़ी राखण रै सोख वाळा हा । गोकुळ सा हुंकारो सगळां नै भरता नकारो कैने ई नईं । लांबी चौड़ी लच्छेदार वात्यां अ'र गुलछरि छोड़ण आळा आदमी हा गोकुळ सा । जिक्का अठै चाईजै, वारी वठैई जरूरत हुवै । पतो नहीं देवलोक में है या सुरगलोक में. पण वारा चौपनियां अठै अवस वाची जै । गोकुळ सा रा चौपनिया जद याद आवै जणै को अी अघर बंव रा लोरा मारै या गुलछरि छोड़णा सरू करै ।

बरफआळी

"बरफें ५५ अँ ५८ ठडीठार बरफ, भजेदार बरफ, लच्छेदार बरफ" मूही आ पनळी-नीची अवाज मुणीजती टावर-टीगर रमता-खेलता वम जायता। माठ'र अठीने-यठी ने सूं बरफ आळें रें गाईं वनें पूग जायता। धोरा रो घीघारियो मड जावतो। कोओ पदसं आळो, कोओ दो पइमा आळो छतो वणावण मारु कँवतो। कोओ छोरो सरवत री सीमी मचकावतो अ'र कोओ बरफ ग उछळता टुक्डा वावण ने हाथ पसारतो। गाईं आळो उयफतो कोओ। वो अँक-अँक टावर ने मुळवतो देखणो वावतो। ईं गानर बरफ गो छतो त्पार कर'र कँवतो- "लो वायू मा।"

दूजोरां छोरो हलें मे वोन'र कँवें- ओ अँत पइमी तीं मनें जल्दी घनो दे, मोयो धरवत देवें घनो मारो, मोयो।

'हलें दूँ अँवार दूँ मुन्ना।' गाईं आळो उदळो देवतो।

पदान टावणं त्पानो अ'र हाथ बरफ घसणी मारुं वायो-व्यापो वावतो। पाच ईं मिंगटां मे बाटका री भीट ने आपरें वम मे कर लँवतो।

बाटका देवता सरण हुवें। जा घान मानण आळी हो घूटमा।

बद रो टिगणो, ओछो टाव्यां अर मोटी जाव्यां, नीची नाक अ'र मसूयां मरा बट्टे। दाही तो आवण गो मुकाठ ईं जाली उदळो। मायो मनीरें मूँ, धोरी होरी धोळा गाभा मोटी मडद रा। पगम्भी देव रविदें आळी टावर ताप। धर मू गनीक अर बोळें मनाव आळो हो घूटमा।

ई री धोटी कोची मूँ टाव्यां री धोटी मारें मार्यांरो ईं रँवतो।

मरयो रें दिना मे हो टाव्यां ने घूटमा रा रगण हुवण। दाही

बाण ओ कठे रैवे, काँई काम करे, ईं बाण रो टावरों नै ध्यान राखण री
जरन कोनी रैवती ।

डेक दिन गळी रै कण ई आदमी एण नै बूझ्यो—अरे मूळसा गरमी-
गरमी तां गाड़ो करे फेर सरथी अर वरता रै दिनां में काँई धंधो-मजूरी
चालै ?

मूळसा उथलो देवतो— हां, बाधासा, मँनत अर मजूरी तां पेट खातर
करणो ई पट्टे । नईं तां म्हारै भी परवार मोकळो है । खेती-बाड़ी खातर
म्हारै गांव चलयो जावूं वठै दो दाणा-धान निपजै जद ई परवार अर
गिरस्त रो पालण करीजै ।

मूळसा जद आपरै परवार रो नाव नियो वीं बखत गळी रै बूढियै
पूछ्यो—मूळसा था रै कित्ता टावर-टींगर हँ ?

‘रामजी राजी हँ बाबाजी, भगवान रा दियोड़ा तीन छोरा अर
दो छोर्वां है ।’

‘मां-बाप भी अठै है क्या ?’

‘नईं’... बाबासा ।’

‘वै सगला कठे रैवे ?’

‘उतार परदेस में ।’

बूढियै कैयो— चोखो, रामजी राजी हुबणा ई चाइजै ।

मूळसा मुळक’र उथळायो, आपरी किरपा अर माइतां रै पुन रो ई
फळ है बाबाजी ।

मूळसा बूढा वडेरों नै भी घणो आदर मान सूं देखतो । इयै सैर में
मूळसा रै आ वात कोनी ही क’ मां-मां रो जायो न देसड़लो परायो ।

मूळसा गिरस्त रो पालण करणो आपरो पैलड़ो फरज समझतो ।
अणकारथ बोलण या ठालो वैठणै री वात तो माथै में ई कोनी लावतो ।

जद कदै इण नै वरा वरी आला ठाला वैठ्या या अठीनै-वठीनै डोला
मारता दीखता, मूळसा विण नै उपदेस देणो सरू कर देवतो । चोखी अर
मन भावती सीख देवतो ।

मिरचियो बडो मसखरो हो । वो मूळसा रो सील नै मजाक ई शतरो ।

वो मूळसा नै अेक दिन कैयो, मूळसा ! जिंको आदमी रोजीना खाय अर खावणो ई सोचै वो मिनल घोडे ई हो वैं, वो तो पसु.....। एसा तो बळघ ई घूमता रै वैं । थूं भी आ वैंल जूणो ई भोगै है ।

मूळसा आ बात सुणर मघरो सीक मुळकयो अर बोल्यो—वो मिनल एा जिंको मिनल जघारो लैयर टालो वैंट्यो माश्यां मारै । वा सूं तो पसु भेतो जिंको आपरै बाछां रो घ्यान पूरी राखै । मालक नै देख'र हुर कै धर आप साह फायदो वा नै पूगावै ।

मिरचियै रा होम हवास उडग्या । वो भी जण दिन सूं आपरै घघे में मागयो ।

पैहो करण में मूळसा कम कोनी उतरतो । रोजीना च्यार-पाच मोल पक्कर तो काटतो ई । घर सूं हमेसा आपरै जचियोड़े रस्ते सूं ईज वैवतो रस्तो भी पिसो जिबं सूं सगळें सै'र रै खास-२ गळिया रो परिक्रमा निवळ शारनी ।

मूळसा मझूर पवको । रोजीना रा छः सात रुपिया रै नैडा टक्का भेजा कर'र घर में बडतो ।

भेटो रै ब्याव रो जिंती बिन्ता कोनी ही उत्ती वेट्यांरो । ई रै खुद रै तै'र यानि उत्तर परदेग में दापजे (बहेज) रो कुरीज घालै । अेक बेटी रा हाथ बीजा करण साह ओटा सूं ओटा च्यार पांच हजार रुपिया खरब करमा ई पड़े । जबाई ने पत्तग, रेडियो, साईकिल हाथ पड़ी अ'र घर बिनरी रो मामान भी देखो पड़े । मूळसा भाप रै वेटारी सगळें ब्याव सातर दापयो आपरै लुगां नूं कोनी लेणो आवतरो ।

मूळसा नै ब्याग तो बाळ रोटी रै अनावा बिन्तो बातरौ कोनी हो । भनीगयोडो नई हो तो अनुभव नूं हुनीगयोडो भवन हो । मादो गावणो अ'र मादो रैरणो ई खिरै रै जीवण रो मेव । मरती अर बरणां में आपरै तै र अर मरती में बीबादेर रो गळिया में टावरा नै राखी करण, गेल्ल

कूदावण अर मजूरी करण नान आवतोईज ।

चीतीण कुर्घसूं फोट दरवाजे गैर-वाजार, अ'र फेरु सगळ सै'र रो चक्की निकालतो आपरी आ पत्तील अ'र मीठी अवाज सुणावतो वरफ...SS ठंडीठार वरफ, मजेदार वरफ, लच्छेदार वरफ... वीं वग्वत खेलता कूदता, रोयता-हंसता अ'र नींद नेवता नान्हा वालक मूळमा री बोली सुण'र गाटे कानी भागता ।

हान भी कदै-कदान वालकां रै मूढा मायसूं भी आ सुरीली अवाज सुणीजे "ठंडी ठार वरफ, लच्छेदार वरफ, मजेदार वरफ, । मिनखांरी माया अ'र विरखां री छाया ई बोली लागे, वाकी सजार में कई सार कोनी ।

कली आली

कली करालो वरतणा र कली...ईई, कली करालो वरतणा र कली... ईई ई, वडी पतली अर सुरीले कंठ सू गली-गुवाड मे अवाज सुणीजती । अवाज मे जाणै मीठी मिसरी, घोळ्योड़ी हुवै ।

छोई घरा सू, मोटी ह्वेत्या सू, भूपड्या सू अर टंगा री कोटिड्या पू पाठी अवाज जोर सू आवती-ओ कली आंळा र अठोनें आव र, पनें म्हा र घरे वुलावै ।

कली आळो उधळो दैवतो-आवूं वैन सा, ऊभारो मा सा टैरो भाईजी-अवार हाजर हुयो । घडीक छंडे हाजर हुयो ।

कली आळो जिको गळो मे बैठ जावतो वठै वरतणा रो डेर नाग जावतो । पीतळ री धाळ्या, पीतळरी परातां चीमुख अर दुमुख्यां कढायळिया फुडळनिया अर, तपेत्या (वाटक्यां) रो डिगलो सामे पड्यो रैवतो । कैरोई अक नग फोनी गुमावतो । इतो नेरु, नीमल आळो हो । मगळा सोग-सुगायां नै, ई र माथे पक्वो विस्वास हो ।

एल-सूँचे लीलन र कपडे री लमल लगायोड़ी, ऊपर टोली दाली बोळी पैरणनें अर टायररी चप्पन पर्गा मे पैरियोटी चौक चौक, गनी-गुवाड, जनें जनें मजूरी वास्ते घुमजो रैवतो ।

ना पणो सांबो मा आंछी गळ भरणी रग रो तीलो-तीलो नाच, गळ र साडा पडपोडा दाही वडियोडी अर मूछा कड वावरी ही । माथे ऊपर नेरु गिणतीरा दोरता बावी सा टाट पड्योड़ी ही कडे-कडेई माथे ऊपर बाळा दागा बोपले रा साग्योडा साफ दीसता । बोळी पैरण आळो



सगळी ई धोळी रवाळा नूं भर्यांटी आ मालम घानतो के त्रानं मजूगे कर्ना-कर्ना ई आयो हे ।

गाने रे माथे नूं फुट्योटी-टुट्योटी पीपी जिके में कोयला, टाट रो टकटो, नारेळरी जोटी जर्न गायतो । अंक दिव्ये में कळी रा चमकता टकटा अर नोमादर रो पाउडर । मार्ग ई वी पीपे में नोहर पाडप री छोटी भूंगळी, फू कदेवण री चमडे आळी घोंकणी राखतो । जिके मोहल्ले में कळी करणी हुवे वी जर्न अंक टोटो सो खाटो गुग्गी मूं खोद'र त्यार कर लेंवे । फेर विणने पाणी अर कांकर मुट्टु नूं भट्टी रो तरें वणाय'र मजवूत करे अर लोह री नळी आळी तरें वंटायर चमई आळी घोंकणी लगाव । फेर ऊपर मूं कोयला डाल'र हाथ नूं घोंकणी चलाव । जद घोंकणी नूं हवा सरू हुय जाव, बो वास्ती (आग) सुळगावण री त्यारी करे । कोयला रे बीच थोडो सो उंगळी मूं खाडो वणाय'र बीच में नारेळरी जोटी राख दे । चोळी री जेव नूं अंक मिगरट माचस निकाल'र सुळगाव अर विण मूं ई नारेळरी जोटी । वास्ती सुळगण रे पाछे सिंगरेट री कस खींचतो रेंवतो अर कळी रो काम जारी राखतो । कळी आळो वडो मँनती हो ।

घरे कदै निठल्लो कोनी वंठतो । हाथ माथो हुवतो जण ई खुडो टिकाय'र वंठतो नी तो आपरी मजदूरी खातर खूब चक्कर लगावतो । वरतणां माथे कळी इतरी फूटरी अर चमकदार करती जाणे सगळा वरतण अवार ई चांदी री खाण मा'सूं निकाळ्या हुवं । वी रे शरीर में गजवरी फुरती । हाथ फटा-फट हसा चलावतो जाण कोई मशीन चाली हुवे । ललाट माथे पसीणें रा वाळा वंवण लागता । कुरतो भोज'र गोलो हुय जावतो । विण जर्न आ कवत याद आवे क' कमावण में ओही नूं चोटो ताई पसीणो आजायां करे ।

कळी आळी कोरी मजदूर ई कोनी हो संगीत कळा प्रेमी अर सुरील कंठा नूं गावणियो । संनीमा देखण री घणो कोड । संनीमा रे अकटरा री नकल भी विणने आवती । आ वाते जद मालम पड़ी क'

मैंर दिन म्हारो गळी मूं 'कळी करालो वरतणा पै कळी '...ई ई ई
 भाव ईवतो जाय रयो हो । अक दरजण वरतणा रै कळी करारण
 गानर विपन हेलो मारयो ।

म्हें पूछ्यो अरे कळी आळा, अकः रपियेरा वित्ता नगा मायें कळी
 हरे ?

कळी आळो-बावूजी, रपियेरा च्यार ।

'बोन मुहगा करे, भायेंना ! रपियेरा छः नग तो करदें ।'

'नई बावूजी कोनी हूवें, कळी रा दोन बोन वटग्या । म्हानें कळी
 मणी कोनी पडें ।

म्हें कँयो-अर म्हारें विगा पैगा मस्ता आवें । रात दिन निगण नै
 बँट'र मैनत करी जे जद कडेंई पैमा निपजें ।

बो बोल्पो-बावूजी, आप बाईं लेवक हो या दनर मे बायू ?

'बायू नई भाई, बाय्या लिगणी पडें, गीत अ'र बबितांवा निगणी
 पडें । फेर अणवार मे छपें ।

अच्छा समझयो बावूजी । आप नेवर् अ'र पेविं हो । हू आपरें
 अक रपिये रा पांचे नग वरतणा रै कळी कर देमूं । बोन बडिया अ'र छः
 मईना ई कळी कोनी उनरें इधो काम करमूं बावूजी । ओ कैय'र जारें
 गार्पे मायणो मगळो मयान हेडे उतारियो ।

हू परे जाव'र ईद दरजण वरतण चारें लायो । कळी आळो विण
 रै मायें पटा-पट कळी करनी मळ करें अ'र मस्ती मूं भूम-भूम'र गीत
 गाई । नई हिथी उडूं विपिन अर नई ठेंठ मारवाही रा फोक गीत ।

म्हें पूछ्यो-अरे कळी आळा बहा मीटा-२ गीत बडे मूं पाद
 बगिना है ? बो बोल्पो-बावूजी म्हें पणार्ई मनीमा देख्या है । मने गीत
 गावण अ'र बायो बजावणरो बोन सोय है ।

पेर बीब मे बाव बाट'र बडे बावूजी, म्हें मनीमा मानिर आठ
 बांध्या भी विभी है । विण मे भीग भी । ई कगळी बाय्या गी पोवी
 लणयोही है । अक हाणोपणर मे भेंड भी करी ।

म्हें पूछ्यो— आं गरचां क्युं करिचो ? उधळो मित्यो—वावूजी अंक टायरेक्टर नै म्हें लिख्यो क' म्हारी कांथां मनीमा में लैवो, पण विण छपायोरी पोथी मांगी । रुपिया अंक हजार लगाव'र पोथ्यां छपायी । विण नै भेजी पण को-ओ उधळो कोनी मित्यो ।

आज माथे करयोडा रुपिया मजूरी नूँ उतार रयो हूं । कळी आळो दतरो भोळो साफ हिरदे आळो हो ।

कळी होयगी जद हूं च्वार रुपिया देय'र वरतण लेजावण लाग्यो । विण सभे वीं तीन रुपिया आपरे हक अर मै'नत रा लीना, अंक रुपियो पाछो कर दियो । जावते सभे आ कैयग्यो क' वावूजी आपरा रुपिया अर म्हारी मै'नत रा रुपिया वडा दोरा कमाईजे ।

“अच्छा जं रामजी री” आ कैय'र विण कैयो, वावूजी, जीवांता तो तो फेर मिला लां । आपरो रस्तो नापियो ।

वोत दूर गळी री मोडू कने अवाज सुणीजे कळी करालो वरतणां पै कळी ईई...SS ।

भोळो भाळो, सीधो-सादो, दिन-रात खट्ट'र मै'नत करण आळो कळी आंळो पतो नी जीवै है या कोनी, पण मीठी-र ओळूं अ'र मीठी सुरिली अवाज आज ताई कान में गुंजै । कळी करालो वरतणां पै कळी S ई ई S— ।



